ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - १७ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र सितम्बर (प्रथम) २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल में नवीन ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार
श्रावण पूर्णिमा, अगस्त २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ अंक : १७
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: भाद्रपद शुक्ल, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

सितम्बर प्रथम २०१४

अनुक्रम

१. विवाह न करना राष्ट्र के लिए घातक	सम्पादकीय	०४
२. मनुष्य जीवन में वेद की क्या.....	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	११
४. अमर शहीद जोरावर सिंह	श्री फतह सिंह	१७
५. वैदिक प्रतीकवाद	डॉ. प्रियंवदा	२१
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२५
७. हमारी पंजाब यात्रा	राजेन्द्र जिज्ञासु	२७
८. पुस्तक - परिचय	देवमुनि	२९
९. संस्था-समाचार		३२
१०. जिज्ञासा समाधान-७०	आचार्य सोमदेव	३९
११. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

विवाह न करना राष्ट्र के लिए घातक

सम्भवत: संसार में केवल वैदिक धर्म ऐसा है जिसके विवाह संस्कार में राष्ट्रभृत् होम होता है। राष्ट्रभृत् होम का विवाह संस्कार से कोई सीधा सम्बन्ध तो दिखाई नहीं देता परन्तु हमारी बृहद् इकाई जो मनुष्य, परिवार, समाज से होकर राष्ट्र तक पहुँचती है, उससे हमारा सम्बन्ध न हो ऐसा कैसे हो सकता है। अत: हमारे ऋषियों ने विवाह संस्कार के साथ ही हमें समझा दिया कि विवाह राष्ट्र के लिए किया जा रहा है और गृहस्थ की सन्तान देश की धरोहर होती है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात है कि कोई गृहस्थ उन्नति करे यह ठीक है परन्तु उसकी उन्नति राष्ट्र के विनाश या हानि का कारण न बने यह गृहस्थ को सन्देश दिया गया है। विवाह न करना अपवाद है, विवाह करना स्वाभाविक है। आचार्य अपने शिष्य को गुरुकुल से जाते समय जो उपदेश देता है उसमें एक उपदेश है वंश परम्परा का उच्छेद मत होने देना। वैराग्य और विवाह न करना ये अपवाद हैं।

जो लोग विवाह न करने के पक्षपाती हैं उनकी दो श्रेणियाँ हैं एक जो पुरातन हैं वे समझते हैं कि संसार दु:ख है, पाप है, इससे बचने के लिए विवाह से बचना चाहिए। ऐसे लोग समाज में लोगों को विवाह नहीं करने की प्रेरणा देते हैं। धार्मिक और आध्यात्मिक समझे जाने वाले लोग इसी विचारधारा के समर्थक हैं। आर्यसमाज में भी गुरुकुलीय परम्परा के लोग प्रचारक, उपदेशक, साधु-संन्यासी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी आदि प्राय: विवाह न करने की प्रेरणा देते देखे जाते हैं। ऐसे एक प्रसंग में एक ग्रामीण जिज्ञासु ने बड़ी सटीक बात कही, वह कहने लगा- आप प्रत्येक व्यक्ति को सम्पर्क में आते ही ब्रह्मचारी रहने, संन्यासी बनने की प्रेरणा क्यों करने लगते हैं। इससे गृहस्थ के अन्य सदस्यों को कष्ट होता है और उन्हें भय लगता है कहीं उनके परिवार का सदस्य घर छोड़कर भाग तो नहीं जायेगा। माता-पिता बच्चों के भागने की बात सोचकर भयभीत होते हैं और स्त्रियाँ पतियों के विमुख होने के भय से आक्रोश प्रकट करती हैं। अत: जो व्यक्ति जिस आश्रम और परिस्थिति में है वह उसके नियमों का पालन भली प्रकार करे, गृहस्थ व्यक्ति अच्छा गृहस्थी कैसे बने? व्यसनों से कैसे बचे? बच्चों को संस्कारित कैसे करे? बड़ों की सेवा-सुश्रुषा करते हुए समाज सेवा का कार्य करे, ऐसा मार्गदर्शन प्रचारक और गृहस्थ दोनों के हित में होगा।

जिज्ञासु का दूसरा प्रश्न था आप लोग समाज के अच्छे-अच्छे व्यक्तियों को ब्रह्मचारी रहने और संन्यासी बनने की प्रेरणा करते हो तो क्या समाज के बुरे समझे जाने वाले व्यक्ति ही गृहस्थी बनेंगे फिर समाज में अच्छी सन्तानों का निर्माण कैसे होगा। बात तो जिज्ञासु जी की ठीक है परन्तु अच्छे व्यक्तियों के संन्यासी प्रचारक होने से समाज सुधार का काम अधिक हो सकता है इतना ही अभिप्राय है। गृहस्थी कितना भी काम करे परन्तु उसकी प्राथमिकता उसका परिवार उसका गृहस्थ ही रहेगा।

सम्भवत: समाज में कभी ऐसा समय रहा होगा जब गृहस्थ बनने के लिए प्रेरणा देनी पड़ी हो। महाभारत की कथा है विदुला ने अपने आठ बच्चों में से सात को संन्यासी बना डाला तो राजा को अपनी पत्नी से कहना पड़ा- एक बालक को तो संसारी बना दो नहीं तो राज्य कौन सम्भालेगा। अत: उसने आठवें बच्चे को संसारी और राजा बनाया। खजुराहो जैसे मन्दिरों के पीछे भी ऐसी ही धारणा की कल्पना की जाती है। संसार से विमुख हुए लोगों को प्रेरणा देने के लिए इन मन्दिरों का निर्माण किया गया है। पुरानी विवाह न करने की परम्परा का समाज पर प्रभाव होता होगा परन्तु वह बहुत नगण्य है। किन्तु वर्तमान समय में विवाह न करने की परम्परा बड़े व्यापक स्तर पर चलाई जा रही है और उसका दुष्परिणाम कुछ देशों में सामने आने लगा है। भारत में पुराने लोग आध्यात्मिकता के कारण विवाह से दूर होते थे परन्तु आजकल के लोग भौतिकता के कारण विवाह से दूर हो रहे हैं। आजकल के तथाकथित बुद्धिमानों की मान्यता है कि विवाह सन्तान से अधिक सुख के लिए किया जाता है फिर ऐसा उपाय क्यों न किया जाय कि सुख तो मिल जाय परन्तु सन्तान पालन के उत्तरदायित्व से मुक्ति मिल जाय। यूरोप और अमेरिकी देशों की विलासिता की प्रवृत्ति ने दुनिया के लोगों को यह अनुभव कराने में सफलता पाई कि अधिक सन्तान होने से साधनों की कमी होती है। अत: सन्तान कम हो तो सुख-सुविधा को अच्छी प्रकार से भोगा जा सकता है और आधुनिक साधनों के उपयोग से सांसारिक सुखों को पूरा भोगा जा सकता है। इसके लिए उन्होंने विश्व को परिवार नियोजन का मन्त्र और भौतिक साधन जिनसे सन्तति नियमन किया जा सकता है, ये दो बातें सिखलाईं इस पर अनेक देशों की

सरकारों ने प्रयोग किया। इससे चीन और यूरोप के देशों ने जनसंख्या पर बहुत सीमा तक नियन्त्रण पाया। भारत सरकार ने भी इस मन्त्र का देश में प्रचार-प्रसार किया, पहले कहा गया- बच्चे दो या तीन। फिर कहा गया- हम दो, हमारे दो। फिर कहा गया- हम दो हमारा एक और अब एक वर्ग समाज में उत्पन्न हो गया जो समझता है- विवाह कर लो, सन्तान की क्या आवश्यकता है, जो मानता है हम दोनों मिलकर जितना भी कमायेंगे स्वयं पर खर्च कर सकेंगे इनमें भी जो आधुनिक हैं, उनका मानना है जब सुख के लिए साथ रहना है तो विवाह का झंझट भी क्यों करना। जब तब इच्छा हो एक छत के नीचे रहो जब साथ रहने की इच्छा समाप्त हो जाये तो अपना-अपना अलग रास्ता चुन लो। आज यह विचार विधान सम्मत भी हो गया और बड़े नगरों में लोग इसे लिव इन रिलेशनशिप कहकर सम्मान से स्वीकार करने लगे हैं। स्त्री-पुरुष सम्बन्ध सन्तान के प्रयोजन से प्रारम्भ होकर सन्तान की शून्यता पर आ गये हैं। ये विचार लाभदायक समझकर स्वीकार किये गये थे। परन्तु आज इसके परिणाम को देखते हुए इस पर विचार करने का समय आ गया है।

संसार में कोई भी कार्य केवल तात्कालिक लाभ के लिए नहीं किया जा सकता, विशेष रूप से प्रकृति के नियमों की स्थिति प्रयोजन परक होती है। बिना प्रयोजन के प्रकृति का कोई नियम नहीं बना। स्त्री और पुरुष दोनों के होने का मुख्य प्रयोजन सन्तान है जो सृष्टि के क्रम को बनाये रखने के लिए अनिवार्य है। विवाह का मुख्य प्रयोजन सन्तान है इसका सहायक साधन सम्बन्धों का आकर्षण है। हमने सुख के लिए सन्तान को छोड़ दिया तो उसका परिणाम हमारे सामने आना ही चाहिए और आज वह परिणाम हमारे सामने खड़ा है। इसका पहला संकट जनसंख्या के सन्तुलन में बिगाड़ के रूप में सामने है। विश्व के सभी लोगों ने तो इसे स्वीकार किया नहीं इसलिए जिन लोगों ने स्वीकार किया उनकी जनसंख्या कम हो गई और जिन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया उनकी जनसंख्या बढ़ गई। आज यूरोप में, अमेरिका में, रूस में, फ्रान्स में, जर्मनी तक में यह समस्या आ गई। उन देशों में जहाँ के लोग ईसाई मत के अनुयायी हैं वे अल्पसंख्यक बनने के कगार पर हैं और मुस्लिम जनसंख्या तीव्रता से बढ़ रही है। आज उनका कम सन्तान विचार उन्हीं की मृत्यु का कारण बन रहा है।

कम सन्तान का विचार जिस उद्देश्य से अपनाया गया था वह हमारे देश के लिए दोनों तरह से निरर्थक रहा है। हिन्दू मुस्लिम जनसंख्या का जो अनुपात परिवार नियोजन के कारण स्थिर रहना चाहिए था परिणाम उसके विपरीत रहा। हिन्दू समुदाय ने तो परिवार नियोजन का विचार स्वीकार कर लिया, इनकी जनंसख्या उसी अनुपात में कम बढ़ी परन्तु मुस्लिम समुदाय ने इस विचार को अस्वीकार कर दिया, परिणामस्वरूप देश में मुस्लिम जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है और देश का धार्मिक, सामाजिक सन्तुलन गड़बड़ा गया। देश में राजनीतिक समीकरण भी इस जनसंख्या अनुपात के बिगड़ने से बिगड़ने लगे हैं। एक और बात इस परिवार नियोजन के कारण बिगड़ गई, वह है जो लोग अधिक सन्तानों का पालन कर सकते थे उन्होंने तो परिवार नियोजन अपना लिया और जो बच्चों का उचित पोषण, शिक्षा, संस्कार देनें में असमर्थ थे, उनके बच्चों की संख्या निरन्तर बढ़ती रही, परिणाम गरीबी-अमीरी के अनुपात में अन्तर बढ़ता गया। इस प्रकार जिन्होंने परिवार नियोजन स्वीकार किया उन्होंने देश को हानि ही पहुँचाई है। परिवार नियोजन से देश को तीसरी हानि पहुँचने वाली है वह है अगली पीढ़ी में युवाओं का अभाव। आज चीन ने परिवार नियोजन करके जनसंख्या पर नियन्त्रण तो कर लिया परन्तु नियन्त्रण तो उन युवाओं पर हो गया जो तीस वर्ष पहले उत्पन्न होते और देश के काम आते। युवा ही देश की सम्पत्ति होते हैं। आप सन्तान उत्पन्न न करके देश को युवा होने से तो रोक रहे हैं। आज हमारा देश युवा है परन्तु यदि सन्तान नहीं होगी तो तीस वर्ष बाद देश में युवा कहाँ से आयेंगे। युवा ही तो डॉक्टर, इञ्जीनियर, वकील, अध्यापक, किसान, मजदूर, नेता सभी कुछ होता है। यदि युवा नहीं होगा तो देश कौन चलायेगा। हम ऐसी ही भूल कर रहे हैं जैसे कोई किसान बीज के लिए रखा हुआ अन्न खा जाये और खेती करने के समय बीज न पाकर जैसी दशा उसकी होती है वैसी ही दशा आज हमारे देश की हो सकती है, यदि हम समय पर इस समस्या का समाधान न कर सके। धार्मिक विचारों में एक अकेले मोहम्मद साहेब हुए हैं जो कहते हैं जिस दिन संसार में कयामत का दिन होगा उस दिन या तो संसार में केवल मुसलमान होंगे या उन्हीं की संख्या सबसे अधिक होगी। उनका मानना था कि जितनी अधिक सन्तानें होंगी हम उतने ही बलवान् होंगे, हमारा ही धर्म विश्वधर्म होगा, हमारा ही शासन होगा। इसलिए वे जहाँ अनेक स्त्रियों से विवाह करने की बात करते हैं वहीं जो महिला विधवा हो, सन्तान

उत्पन्न करने में समर्थ न हो, उसको वे विवाह के योग्य भी नहीं मानते। इस मान्यता के कारण आज जनसंख्या का सन्तुलन विश्व में बिगड़ रहा है। जो जनसंख्या नियन्त्रण करने वाले और न करने वालों के कारण बिगड़ रहा है।

परिवार नियोजन के पीछे एक सोची-समझी रणनीति के अन्तर्गत कार्य हो रहा है। वह है न्यू वर्ल्ड ऑर्डर जिसके अनुसार इस विश्व की जनसंख्या को आज की तुलना में २०-३० प्रतिशत तक लाना चाहते हैं। इसके लिए वे किसी भी उपाय का सहारा लेने में संकोच नहीं करते। वे उपाय युद्ध, अकाल, बीमारी और देर से विवाह करना, विवाह न करना, विवाह करके भी सन्तान उत्पन्न न करना आदि कुछ भी हो सकते हैं। जिसका परिणाम जनसंख्या कम करने में सहायक है। परिवार नियोजन भी उसी कार्यक्रम का एक भाग है। नये पढ़े-लिखे युवक-युवतियाँ इस चक्कर में बड़ी आसानी से फंस जाते हैं। इसको क्रियान्वित करने के लिए आजकल के युवाओं को एक मन्त्र दिया गया कैरियर बनाना। अर्थात् वे आज के स्थान पर आने वाले कल के विषय में सोचते हैं और ऐसा करके वे आज के लाभ से वञ्चित हो जाते हैं। आज युवक-युवतियाँ इस उज्ज्वल भविष्य के लोभ में विवाह करने की बात नहीं सोचना चाहते। उन्हें लगता है यदि विवाह कर लिया तो भविष्य चौपट हो जायेगा। इस भविष्य में उनका वर्तमान कैसे नष्ट हो रहा है उनको पता ही नहीं चलता।

प्रकृति ने जन्म के साथ शरीर की क्रियाओं को जोड़ रखा है। बालक बड़ा होकर युवा बनता है, उसकी आयु सन्तान उत्पन्न करने की होती है, स्त्री की आयु सन्तान उत्पन्न करने के योग्य सोलह वर्ष की मानी गई है, आज की वैधानिक स्थिति है स्त्री की विवाह योग्य आयु अट्ठारह वर्ष मानी गई है। इस्लाम में विवाह की आयु नौ से बारह वर्ष स्वीकार की गई है। इसमें तो उसका क्या भविष्य बनना है? वह स्वयं ही नहीं बनी होती है। युवकों की विवाह की आयु २१ वर्ष मानी गई है परन्तु २१-२२ वर्ष में पढ़ाई भी पूरी नहीं होती। विशेष अध्ययन, अध्यापन प्रशिक्षण कार्य करते-करते आज युवक-युवतियाँ ३०-३२ वर्ष के सामान्य रूप से हो जाते हैं फिर इन पर कैरियर का भूत सवार होता है तब तक वे ३४-३५ वर्ष के होते हैं, तब काम के बोझ से इतने दबे होते हैं कि विवाह कर भी ले तो वैवाहिक जीवन के योग्य ही नहीं रह पाते। पहली बात स्त्री की सन्तानोत्पत्ति हेतु श्रेष्ठ आयु २२ से ३२ वर्ष की मानी गई है वह आयु कैरियर बनाने के चक्कर में निकल जाती है। काम के बोझ से उनको व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक जीवन के लिए समय ही नहीं मिलता। इसके कारण उनमें दो दुर्बलतायें आ जाती है मानसिक दृष्टि से वे अवसाद की ओर बढ़ने लगते हैं। जिसका प्रमाण है बैंगलूर, मुम्बई जैसे बड़े नगरों में मनोरोग और मनोचिकित्सक तेजी से बढ़ रहे हैं। दूसरे जब हमारे युवा अच्छे पदों पर पहुँचते हैं, बड़े वेतन व सम्मान पाते हैं, तबतक उनके शरीर में अनुत्पादकता का रोग लग जाता है, वे चाह कर भी सन्तान उत्पन्न नहीं कर पाते। इस बात की बड़ी चर्चा पिछले दिनों समाचार पत्रों में तथा इण्टरनेट पर देखने में आ रही है। टाटा कन्सलटेन्सी सर्विसिज़ में नब्बे हजार कर्मचारी स्वस्थ सम्पन्न होने पर भी उनमें से १५ प्रतिशत लोग सन्तान उत्पन्न करने के अयोग्य हैं, यह एक प्रकार की अस्थायी नपुंसकता है।

संस्थान ने बीमा कम्पनी से प्रस्ताव किया कि इस रोग के लिये भी कर्मचारियों का बीमा किया जाय और चिकित्सा की आवश्यकता होने पर चिकित्सा व्यय बीमा कम्पनियाँ वहन करें। उन्होंने प्रस्ताव भेजने के लिए कहा, संस्थान ने बीमा कम्पनी को प्रस्ताव भेजा परन्तु बीमा कम्पनी ने उस प्रस्ताव को दो आधार पर रद्द कर दिया- प्रथम कारण है नपुंसकता कोई रोग नहीं है। इसके लिए ऐसा कारण नहीं जिसकी सीधी दवा दी जा सके। दूसरा कारण बताया इस रोग की चिकित्सा के लिये रोगी को अस्पताल में प्रविष्ट नहीं कराया जाता। अतः बीमा कम्पनी इसमें भुगतान नहीं कर सकती। बीमा कम्पनी चिकित्सालय में प्रविष्ट रोगी का व्यय वहन करती है और नपुंसकता के रोगी को चिकित्सालय में प्रविष्ट नहीं कराया जाता। अतः इसके लिए बीमा कम्पनी चिकित्सा व्यय नहीं दे सकती। तीसरा कारण नपुंसकता और रोगों जैसा रोग नहीं है, यह तनाव के कारण होने वाली मानसिक परिस्थिति है। अतः इसका मुख्य उपचार वातावरण व परिस्थिति में सुधार लाना है, औषध उपचार तो गौण है। अब प्रश्न उठता है जिस मनुष्य के पास पर्याप्त धन है, नौकर-चाकर है, गाड़ी-बंगला, पद-प्रतिष्ठा है फिर उसे तनाव क्यों है? यहाँ कम्पनियों की रीति-नीति उत्तरदायी है।

आज हम समझते हैं कि हमारे युवाओं को कम्पनी बड़े वेतन, पाँच सितारा सुविधा, हवाई जहाज, वातानुकूलित कार, विशाल भवन दे रही है, आज काम करने के लिए

शेष भाग पृष्ठ संख्या ३६ पर.....

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

मनुष्य जीवन में वेद की क्या आवश्यकता है?

– स्वामी विष्वङ्

बुद्धि का समुचित प्रयोग करने वाले बुद्धिमान् मनुष्य सृष्टि (संसार) को देखते हैं, तो सृष्टि बुद्धिपूर्वक दिखाई देती है। सृष्टि में कोई ऐसा पदार्थ (सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि जिस किसी भी पदार्थ को सम्मुख रख कर देखें) नहीं है, जो बुद्धिपूर्वक न हो। सभी पदार्थ व्यवस्थित हैं। पदार्थों में व्यवस्था सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में दिखाई दे रही है। इसलिए बुद्धिमान् मनुष्य स्वीकार करते हैं कि इस विशाल सृष्टि का कोई **'कर्त्ता'** अवश्य है। बिना कर्त्ता के यह सृष्टि अपने आप नहीं बन सकती है। लोक में एक भी ऐसा पदार्थ नहीं मिलेगा जो बिना बनाने वाले के स्वयं अपने आप बुद्धिपूर्वक बन गया हो। बनाने वाले सभी मनुष्य अपनी बुद्धि का विशेष प्रयोग करके बड़े प्रयत्न से बनाते हैं। यह अलग बात है कि हम, सभी बनाने वालों को देख नहीं पाते हैं। फिर भी बनाने वालों को स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार सृष्टि को भी बनाया गया है। उस बनाने वाले को हमने नहीं देखा है। किसी वस्तु के बनाने वाले को नहीं देखा या नहीं देख सकते हैं, इतने मात्र से बनाने वाला कोई नहीं है और वह अपने आप बन गयी हो, ऐसा नहीं मानना चाहिए।

यदि किसी वस्तु को मनुष्य ने बनाया हो और वह जीवित न हो, तो क्या उसे यह तो नहीं कह सकते कि वह वस्तु अपने आप बन गयी है। यदि उस वस्तु को बनाने वाले को किसी अन्य मनुष्य ने नहीं देखा हो तो उस वस्तु के विषय में बताने वाला भी कोई नहीं है, क्योंकि किसी ने नहीं देखा। ऐसी स्थिति में हम अन्य वस्तुओं के समान इस वस्तु को समझ कर अनुमान लगाते हैं कि इस वस्तु को किसी ने बनाया। यह तो अनुमान नहीं लगाते हैं कि यह वस्तु अपने आप बन गयी है? ठीक इसी प्रकार सृष्टि को भी समझना चाहिए कि इसे भी किसी ने बनाया। हाँ, सृष्टि को बनाने वाला मनुष्य नहीं हो सकता, क्योंकि विशाल सृष्टि को बनाने का सामर्थ्य किसी भी मनुष्य में नहीं है और सभी मनुष्य मिल कर भी नहीं बना सकते। इसलिए मनुष्यों से भिन्न विशेष सामर्थ्य वाला कोई होना चाहिए। ऐसा अनुमान होता है। मनुष्यों से भिन्न जो भी होगा उसे हम ईश्वर शब्द से कह रहे हैं। हो सकता है कोई अन्य शब्द से कहे परन्तु शब्दों में भिन्नता हो सकती है किन्तु बनाने वाले में कोई भिन्नता नहीं आयेगी। इससे स्पष्ट होता है कि सृष्टिकर्त्ता है।

कोई यह कहे कि सृष्टि पहले से ही है अर्थात् उत्पन्न ही नहीं हुई है, नित्य है। ऐसी स्थिति में सृष्टिकर्त्ता को मानने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी? ऐसा कोई भी नहीं कह पायेगा क्योंकि सृष्टि बिगड़ती भी है। जो बिगड़ती है– ह्रास होती है, वह अनित्य होती है। जो अनित्य (विनाशशील) होती है वही उत्पन्न होती है। इसलिए सृष्टि को उत्पन्न मानना चाहिए। सृष्टि की रचना को देख कर बनाने वाले का जो ज्ञान (जानकारी) होता है, वह सामान्य होता है अर्थात् किसी ने बनाया बस यह ही सामान्य जानकारी है। परन्तु वह कौन है? क्या नाम है? कहाँ रहता है? उसका क्या स्वरूप– लक्षण है? अर्थात् उसके क्या गुण हैं? उसके क्या कर्म हैं और उसके क्या स्वभाव हैं? ऐसी विशेष जानकारी नहीं होती है। सामान्य जानकारी से सामान्य सुख–लाभ होता है और विशेष जानकारी से विशेष सुख होता है। मनुष्य का स्वभाव है उसे विशेष–सुख चाहिए। सामान्य सुख से मनुष्य कभी सन्तुष्ट नहीं होता है। इसलिए मनुष्य विशेष जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा–प्रयत्न करता है और विशेष सुख भी लेता है।

मनुष्य संसार के विशेष पदार्थों (भौतिक पदार्थ) को जान कर सांसारिक विशेष लाभ तो लेते हैं परन्तु सृष्टिकर्त्ता से सम्बन्धित विशेष लाभ नहीं लेते हैं। यदि हम सृष्टिकर्त्ता से सम्बन्धित विशेष जानकारी प्राप्त कर लें, तो निश्चित रूप से सृष्टिकर्त्ता से सम्बन्धित विशेष लाभ ले सकेंगे। सांसारिक विशेष लाभों से मनुष्य सन्तुष्ट नहीं हो पा रहा है। ऐसी स्थिति में सृष्टिकर्त्ता से सम्बन्धित विशेष जानकारी प्राप्त करके विशेष लाभ लेकर सन्तुष्ट हो सकते हैं। संसार के लाभों का हमें अनुभव है परन्तु सृष्टिकर्त्ता के लाभों का अनुभव करना हमारे लिये अनिवार्य हो जाता है। क्योंकि उसका अनुभव नहीं है। इसलिए अनुभव करके ही पता लगाया जा सकता है। इसलिए बुद्धिमान् मनुष्य को सृष्टिकर्त्ता से सम्बन्धित विशेष जानकारी प्राप्त करके विशेष सुख का अनुभव करके देखना चाहिए। जिससे यह पता लग जायेगा कि आत्मा को पूर्ण सन्तुष्टि होती है या नहीं? मनुष्य के समक्ष सुख पाने के दो ही विकल्प हैं। एक विकल्प

सांसारिक विशेष सुख दूसरा विकल्प ईश्वरीय सुख। दोनों में एक सांसारिक सुख का अनुभव है परन्तु ईश्वरीय सुख का अनुभव नहीं है। इसलिए जिसका अनुभव नहीं है उसका अनुभव करना अनिवार्य बन जाता है।

ईश्वरीय सुख प्राप्त करने के लिए ईश्वर सम्बन्धी विशेष जानकारी प्राप्त करना चाहिए और वह जानकारी हमें किस प्रकार प्राप्त होगी, इसकी भी जानकारी होनी चाहिए। जिस ईश्वर ने सृष्टि को उत्पन्न किया है, इस सृष्टि संरचना को देखते हुए यह प्रतीति होती है कि सृष्टि को बनाने वाला बहुत ही बुद्धिमान् है। इस अद्‌भुत सृष्टि को बना कर परमेश्वर ने जिस प्रकार से मनुष्यों की शरीर रचना की है। इससे पता लगता है कि ईश्वर ने सृष्टि के उपयोग सम्बन्धी जानकारी भी मनुष्य को दी होगी कि इस सृष्टि में किस प्रकार के पदार्थ हैं और उन्हें किस प्रकार प्रयोग में लाना है तथा मनुष्यों को परस्पर किस प्रकार व्यवहार करना है इत्यादि की जानकारी अवश्य ही दी होगी। इसके बिना मनुष्यों के पास आज जो जानकारी है वह नहीं हो सकती क्योंकि मनुष्य के स्वभाव में ऐसी जानकारी नहीं है। इसलिए जानकारी का आदि स्रोत ईश्वर को ही मानना चाहिए। इस बात को ध्यान में रखते हुए सभी ऋषि, महर्षि, महापुरुष इसे एक स्वर (मत) से स्वीकार करते हैं महर्षि वेदव्यास योग की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि

'ज्ञानधर्मोपदेशेन कल्पप्रलयमहाप्रलयेषु संसारिणः पुरुषानुद्धरिष्यामीति।'

अर्थात् समस्त पदार्थों का ज्ञान देकर और कर्त्तव्य अकर्त्तव्य के बोध के लिए धर्म का उपदेश (वेद के माध्यम से) कर सांसारिक मनुष्यों का कल्याण करूँगा, ऐसा विचार करके ईश्वर बार-बार सृष्टि बना-बना कर उद्धार करता है। जिससे मनुष्यों को पूर्ण सुख मिल सके। मनुष्यों के प्रति यह ईश्वर की बहुत बड़ी कृपा है।

कोई मनुष्य यह विचार न करे कि सृष्टि की उत्पत्ति में ईश्वर का भी अपना कोई प्रयोजन (स्वार्थ) होगा। क्योंकि यह विचार मनुष्य को इसलिए आता है कि संसार में कोई ऐसा मनुष्य नहीं है जो बिना प्रयोजन (स्वार्थ) के कुछ भी उपकार करता हो। चाहे वह सामान्य मनुष्य हो चाहे विशेष ऋषि, महर्षि भी क्यों न हो। सभी स्वार्थ की सिद्धि के लिए उपकार करते हैं। हाँ, स्वार्थ दो प्रकार का होता है। एक स्वार्थ लौकिक फलों को प्राप्त करने के लिए होता है और दूसरा स्वार्थ मोक्ष के फलों को प्राप्त करने के लिए होता है। जो लोग सांसारिक फलों को न चाहते हुए उपकार करते हैं, उन्हें निःस्वार्थ उपकार करने वाले हैं। ऐसा कह दिया जाता है परन्तु वह कथन लोक की दृष्टि से है यथार्थ में नहीं है, ऐसा मानना चाहिए। इसलिए सभी अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए उपकार करते हैं। इस सिद्धान्त के आधार पर ईश्वर में भी संशय होता है कि वह भी अपने प्रयोजन के लिए सृष्टि बनाता होगा? परन्तु ऐसा नहीं है। इस बात को महर्षि वेदव्यास ने योग की व्याख्या में स्पष्ट किया है कि

'तस्याऽत्मानुग्रहाभावेऽपि भूतानुग्रहः प्रयोजनम्।'

अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति करने में उस ईश्वर का अपना (स्वयं का) कोई भी प्रयोजन (स्वार्थ) नहीं है। फिर भी ईश्वर ने प्राणिमात्र के कल्याण (सुख) के लिए सृष्टि की उत्पत्ति की है।

ईश्वर कोई भी अप्राप्त को प्राप्त करने की इच्छा नहीं करता है क्योंकि ईश्वर को सब कुछ प्राप्त है। इसलिए ईश्वर का अपना कोई प्रयोजन (स्वार्थ) नहीं है। फिर भी सृष्टि बनाता है, यह ही ईश्वर की महानता है। ऐसे महान् ईश्वर को जानने की इच्छा करनी चाहिए। ईश्वर को जानने का माध्यम **'वेद'** है क्योंकि ईश्वर ने जब सृष्टि बनाई है तब ईश्वर ने मनुष्यों को जानकारी दी है उसी जानकारी को परम्परा से मनुष्य सुनते-सुनाते हुए आ रहे हैं। जब मनुष्य की स्मरण शक्ति न्यून (कम) होने लगी तब मनुष्यों ने लिपि में उस जानकारी को लिपिबद्ध किया है। उस समय से आज तक वेद रूपी जानकारी चली आ रही है। वही वेद आज हमारे समक्ष विद्यमान हैं, उसी वेद के माध्यम से हमें ईश्वर सम्बन्धी जानकारी मिलेगी। यहाँ पर कोई यह कह सकता है कि वेद को ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों स्वीकार किया जाये दूसरों को क्यों नहीं? वेद को इसलिए स्वीकार करना चाहिए क्योंकि वेद सब से पुराने हैं, केवल पुराना होने मात्र से नहीं इसके साथ यह भी है वेद और सृष्टि एक समान हैं। इसका अभिप्राय यह है कि जैसा वेद में है वैसा ही सृष्टि में है और यह भी कह सकते हैं जैसी सृष्टि है वैसा ही वेद में वर्णन है। इसलिए वेद और सृष्टि में एकरूपता है। वेद में सभी विद्याएँ मूल रूप में हैं। वेद किसी भी मनुष्य के लिए स्वीकार्य है क्योंकि वेद में ऐसी कोई असत्य, अन्याय युक्त बात नहीं है जो मनुष्य अस्वीकार कर सके। वेद सबके लिए है इसे सिद्ध करने के लिए अनेकों कारण हैं। यहाँ पर उनकी चर्चा करना मुख्य नहीं है। मुख्य विषय है ईश्वर को विशेष रूप से कैसे जाने? इसके समाधान के लिए वेद को पढ़ने की बात आई है, जिससे ईश्वर का विशेष ज्ञान होगा।

वेद से ईश्वर का नाम, स्थान और उन के गुणों, कर्मों और स्वभावों की यथार्थ जानकारी होती है। वेद को पढ़ कर सीधा-सीधा ईश्वर का ज्ञान सब को नहीं हो पाता है। इसलिए ऋषियों ने वेद को समझने के लिए अनेकों ग्रन्थ बनाये हैं। उन ग्रन्थों को पढ़कर उनके सहयोग से वेद को जान सकते हैं, वेद कहता है कि ईश्वर का नाम **'ओ३म्'** है। वेद कहता है ईश्वर सर्वव्यापी है अर्थात् ईश्वर सब जगह रहता है, ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ ईश्वर न हो। इसलिए ईश्वर 'सर्वव्यापक' है। वेद कहता है ईश्वर सर्वज्ञ है और सर्वशक्तिमान् है। वेद यह भी कहता है कि ईश्वर ने ही सृष्ट को उत्पन्न किया है और पालन भी कर रहा है। जब सृष्टि मनुष्यों को सुख देने में असमर्थ होती है तब ईश्वर सृष्टि का प्रलय (विनाश) करता है। विनाश इसलिए करता है जिससे दुबारा बनाया जा सके। किसान के समान ईश्वर भी करता है। जिस प्रकार किसान फसल लेकर भूमि को जोत कर कुछ समय तक बिना बोये रखता है। जिससे भूमि में पुनः सुख देने का सामर्थ्य आ सके। ठीक इसी प्रकार ईश्वर भी सृष्टि का विनाश करके कुछ समय तक खाली रखता है। जिससे सृष्टि के कारण में मनुष्यों को सुख देने का सामर्थ्य आ सके। वेद से यह भी पता लगता है कि मनुष्य संसार में क्यों आया है? उसका उद्देश्य क्या है और उस उद्देश्य को किस प्रकार से पूर्ण किया जाता है? इत्यादि सभी प्रश्नों का समाधान हो जाता है।

वेद के माध्यम से मनुष्य को मनुष्य के सामर्थ्य का बोध हो जाता है कि बिना ईश्वर के सहयोग के मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता है, मनुष्य को यह भी जानकारी वेद से होती है कि मुझ मनुष्य में क्या-क्या गुण, कर्म, स्वभाव हैं और क्या-क्या नहीं हैं। मनुष्य को यह भी बोध हो जाता है जो गुण मुझ मनुष्य में नहीं हैं और जिस ईश्वर में हैं, ऐसे ईश्वर को देखने की उत्कट इच्छा भी मनुष्य में उत्पन्न होती है। वेद को पढ़ने से मनुष्य को यह भी बोध होता है कि जिस संसार (सृष्टि) में रह रहा हूँ, वह संसार मुझ मनुष्य को पूर्ण सन्तुष्ट नहीं कर सकता। फिर भी संसार में रहने की इसलिए आवश्यकता है कि संसार मुझ मनुष्य को ईश्वर तक पहुँचाने वाला है। संसार के बिना मनुष्य ईश्वर तक नहीं पहुँच सकता। इसलिए संसार साधन है संसार कभी भी साध्य-लक्ष्य नहीं बन सकता। मनुष्य को जब यह जानकारी हो जाती है कि संसार साधन है लक्ष्य नहीं है, तो संसार में रह कर संसार को साधन के रूप में प्रयोग करता हुआ ईश्वर रूपी लक्ष्य को प्राप्त करने की चेष्टा करने लगता है। मनुष्य अपनी चेष्टा को वेद के अनुसार करके ईश्वर रूपी लक्ष्य को प्राप्त कर भी लेता है।

जो मनुष्य वेदों को पढ़ा तो नहीं है परन्तु वेदों के विषय में सुना है और अग्निहोत्र (हवन) सन्ध्या आदि में पढ़ा है। क्या पढ़ा है और क्या सुना है? यह ही पढ़ा और सुना है कि मनुष्य वेद के अनुसार चल कर अपने लक्ष्य को पूरा कर सकता है। जो लोग कुछ सुन कर या कुछ मन्त्र मात्र पढ़ कर ईश्वर को प्राप्त करने के लिए वैसा पुरुषार्थ नहीं कर सकते जैसे वेदों को विधिवत् पढ़ कर (शब्द अर्थ सम्बन्धों को जान कर) कर सकते हैं। कोई यह नहीं समझे कि विधिवत् पढ़ने का अभिप्राय केवल गुरु-आचार्य के पास जा कर विद्यार्थी के रूप में रह कर गुरु मुख से पढ़ना ही पढ़ना अन्यथा पढ़ना नहीं है। इसका अभिप्राय इस प्रकार लेना चाहिए कि विद्या किसी भी रूप में (गुरु मुख से या किसी के उपदेश से अथवा स्वयं पढ़ के) प्राप्त करे परन्तु जितनी विद्या पढ़ कर ईश्वर, जीवात्मा और संसार का यथार्थ बोध-विवेक कर लें और उस विवेक से वैराग्य पा कर समाधि लगा सके उतनी विद्या को प्राप्त करना अनिवार्य है। जितनी विद्या से अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश दूर होते हों उतनी विद्या को किसी भी माध्यम से प्राप्त करे। यहाँ मुख्यता माध्यम (गुरु से उपदेश से) की नहीं है मुख्यता तो विद्या की है। विद्या के होने पर सुख लाभ होता है और न होने पर सुख लाभ नहीं होता है। प्रसंग का अभिप्राय है कि विद्या को प्राप्त करना चाहिए और वह भी ईश्वर सम्बन्धि विद्या को प्राप्त करना चाहिए। ईश्वर सम्बन्धि विद्या को प्राप्त करके ईश्वर का दर्शन करने में समर्थ हो सकते हैं।

ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुरूप ही प्रयत्न करना चाहिए। अर्थात् ईश्वर सर्वव्यापक है और हमें ईश्वर को प्राप्त करना है, तो उसे सर्वव्यापक मान कर ही प्रयत्न करना होगा। यदि ईश्वर को एकदेशी है (एक स्थान पर रहने वाला) ऐसा मानकर उसे प्राप्त करने के लिए जो प्रयत्न करेंगे। वह प्रयत्न कभी सार्थक नहीं बन पायेगा। इसी प्रकार यदि ईश्वर न्यायकारी है तो उसे न्यायकारी मानकर ही व्यवहार करना होगा। यदि ईश्वर को पापों को क्षमा=माफ करने वाला मान कर व्यवहार करते हैं, तो ईश्वर कभी प्राप्त नहीं हो पायेगा। क्योंकि न्यायकारी है, तो पापों का फल अवश्य देगा। यदि कोई ईश्वर को न्यायकारी भी माने और पापों का फल नहीं देगा- माफ कर देगा। ऐसा माने तो क्या आपत्ति आयेगी? क्योंकि ईश्वर न्यायकारी

भी और दयालु भी है। इसलिए पापों को माफ कर देता है, ऐसा कहे तो? ऐसा नहीं कह सकते क्योंकि दयालु का अर्थ पापों को माफ करना नहीं है। फिर क्या है? न्याय और दयालुता में नाम मात्र ही भेद है क्योंकि न्याय करने से जो प्रयोजन सिद्ध होता है। उसी प्रयोजन को दयालुता से सिद्ध किया जाता है। यदि कोई मनुष्य पाप करता है, तो उसे ईश्वर दण्ड के रूप में उसे फल (दु:ख) देता है। जिससे वह पापी भविष्य में पाप न कर सके। जिससे भविष्य के दु:खों से बच सके। ईश्वर पाप के फल देकर भविष्य के दु:खों को दूर कर उस पर दया करता है। परमेश्वर ऐसा करके अन्यों के दु:खों को भी दूर करता है। इस प्रकार परमेश्वर पापी पर दया करता हुआ अन्यों पर भी दया कर लेता है। यदि दयालुता का अर्थ पापों को माफ करना ही लिया जाये, तो पाप बढेंगे कम (न्यून) कभी नहीं होंगे। इसलिए परमेश्वर पापी को दण्ड न दे तो परमेश्वर की दयालुता का नाश होगा। क्योंकि एक पापी को छोड़ देने (माफ करने) से हजारों, लाखों, करोडों लोगों को दु:ख देना है। ऐसी स्थिति में हजारों, लाखों, करोडों को दु:ख प्राप्त होता हो वहाँ परमेश्वर की दयालुता किस प्रकार हो सकती है? इसलिए दयालुता वही है कि उस पापी को दण्ड देकर पाप करने से बचाया जाये। जिससे उस व्यक्ति पर भी दया की जा रही है जो भविष्य के दु:ख नहीं भोगना पडेगा और करोड़ों लोगों पर दयालुता प्रकट होती है।

ईश्वर के न्यायस्वरूप और दयालुस्वरूप के समान अनेकों गुण हैं, जिनको समझना मनुष्य के लिए अति आवश्यक है। क्योंकि ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को शास्त्रों के माध्यम से जान कर ही मनुष्य अन्यों को बता सकते हैं चाहे हम स्वयं शास्त्र पढ़ के जाने या शास्त्रों को पढ़े हुए गुरु जनों से जाने अथवा जाने हुए लोगों के व्यवहार से जाने, किसी भी पद्धति से जाने। जानना अनिवार्य है क्योंकि बिना जानकारी के हम ईश्वर को यथार्थ रूप से नहीं समझ पायेंगे। जब मनुष्य ईश्वर को समझ ही नहीं पाया हो तब ईश्वर का दर्शन भी नहीं कर पायेगा। जो मनुष्य ईश्वर का दर्शन नहीं कर पाता है वह अपने सारे दु:ख दूर कभी नहीं कर पायेगा। इसलिए दु:खों को दूर करने के लिए ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को जानना मनुष्य के लिए अनिवार्य हो जाता है। इसलिए ईश्वर सम्बन्धि विशेष जानकारी के लिए शास्त्र का सहारा लेना ही होगा। जिस प्रकार से किसी वैज्ञानिक द्वारा निर्मित पदार्थ को देख कर हम सामान्य जानकारी करते हैं और यदि उसकी विशेष जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तो वैज्ञानिक की अनुपस्थिति (मृत्यु होने पर) में उसके शास्त्र का सहारा लेते हैं। आज सम्पूर्ण विश्व इसी प्रक्रिया का सहारा ले रहा है। ठीक इसी प्रकार ईश्वर सम्बन्धि विशेष जानकारी के लिए हमें ईश्वर प्रदत्त **'वेद'** शास्त्र का सहारा लेना चाहिए। यहाँ पर मनुष्य की अनुपस्थिति के समान ईश्वर की अनुपस्थिति है इसलिए शास्त्र का सहारा लेना नहीं बताया जा रहा है बल्कि ईश्वर की उपस्थिति तो सर्वत्र है परन्तु हमें प्रत्यक्ष नहीं है। इसलिए वेद शास्त्र का सहारा लिया जाना चाहिए। हाँ, यदि कोई ईश्वर को प्रत्यक्ष करना चाहता है, तो उसके लिए अलग प्रयत्न करना चाहिए।

ईश्वर को समझने का प्रयत्न अलग प्रकार का है और ईश्वर-प्रत्यक्ष करने का प्रयत्न अलग प्रकार का है। अर्थात् ईश्वर के स्वरूप को यथार्थ रूप में समझने के लिए वेद शास्त्र का सहारा लेकर समझना अलग है और ईश्वर को यथार्थ रूप में समझ कर तदनुरूप प्रयत्न करके ईश्वर का दर्शन करना अलग है। संसार में बहुत कम लोग हैं जो ईश्वर के यथार्थ रूप को समझने के लिए वेद शास्त्र का सहारा लेते हैं। जो भी ईश्वर के यथार्थ रूप को जानते हैं, उनमें से बहुत कम लोग हैं जो ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को जानकर तदनुरूप दर्शन करने के लिए प्रयत्न करते हैं। परन्तु जो भी दर्शन करने के लिए विशेष प्रयत्न करता है, वह विरला ही होता है। चाहे वह विरला ही क्यों न हो, पर ईश्वर दर्शन करके अपने सारे दु:ख दूर कर ही लेता है। ऐसा करना ही मनुष्य का वास्तविक प्रयोजन है और ऐसा ही करना हम सब का प्रयोजन भी बनता है। जिस समय हमारा प्रयोजन बनेगा उसी समय हम भी विरलों की कोटी में आयेंगे।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

- राजेन्द्र जिज्ञासु

मिशनरी संस्थाओं तथा परोपकारी संगठनों को धर्म-प्रचार, समाज सुधार तथा जन कल्याण के लिये कुछ बिन्दुओं को बार-बार उठाना और उनका प्रचार करना चाहिये। इससे एक वातावरण बनता है, लोगों की सोच बदलती है, समाज का सुधार और कल्याण होता है। संगठन को शक्ति मिलती है।

हम नित्य अनादि ज्ञान के मानने वाले हैं। विश्व के कल्याण, सुख शान्ति के मूलभूत सिद्धान्त तो नित्य और अनादि ही हैं। विज्ञान भी यही मानता है कि नित्य नियम सदा वर्तमान ही रहते हैं। काल के साथ घिसते, मिटते व बदलते नहीं। वेद की ऋचा में यही तो कहा गया है कि ईश्वर की रचना उसका वेद का ज्ञान न बूढ़ा होता है और न मरता और जीर्णशीर्ण होता है। परन्तु अपनी बात गले के नीचे उतारने के लिए शैली तो बदलती रहती है। हम इस पर ध्यान नहीं देते इसके कुछ उदाहरण आज देते हैं।

मनुष्य को देखकर गाय, बकरी, पक्षी आदि क्यों नहीं डरते?:- आर्य समाज के विद्वान् विचारक और वैज्ञानिक मिशनरी मान्य डा. हरिशचन्द्र जी ने एक पुस्तक में लिखा है कि बिल्ली को देखते ही चूहा भाग जाता है। सिंह, बाघ आदि की गंध आते ही बैल, हिरण आदि सब भाग जाते हैं परन्तु मनुष्य को देखकर भेड़, बकरी, गाय, घोड़ा, मुर्गी आदि लुकते-छिपते नहीं। इसका कारण यही तो है कि उन्हे पता है कि मनुष्य हिंसक मांसाहारी जन्तु नहीं। ईश्वर ने इसे शाकाहारी ही बनाया है।

हमने शाकाहार पर लिखी गई देश-विदेश से छपी सैकड़ों पुस्तकें पढ़ी हैं परन्तु यह मौलिक अकाट्य तर्क डॉ. हरिशचन्द्र जी ने ही दिया है। हमने कभी पहले भी परोपकारी में यह तर्क दिया था। अपनी पुस्तकों में भी दिया है।

एक प्रश्न पूछा गया है:- तड़प झड़प में उदयपुर के पिछौली आर्य समाज के प्रधान श्रीमान् श्रीमाली जी के गृह पर परिवार के सब लोगों की पूर्वलिखित शंकाओं के समाधान के अनोखे अनुभव की बात पढ़कर एक पाठक ने प्रश्न पूछा है कि प्रधान जी के नन्हे पौत्र ने आपसे जो पूरक प्रश्न पूछा कि सृष्टि के आदि में प्रभु ही ज्ञान देता है, यह मान लिया परन्तु वह प्रभु ऋषियों के हृदय में ज्ञान का प्रकाश करता कैसे है? बालक के इस प्रश्न का आपने क्या उत्तर दिया? प्रश्नकर्त्ता का भाव हम समझ गये। बड़ी आयु के और विद्वान् व्यक्ति को उत्तर देना उसे समझाना तो कठिन कार्य है।

हमारा निवेदन है कि हमने उसे श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी के मुख से सुना अनूठा और मौलिक उत्तर दिया जो बच्चे की समझ में झट से आ गया। प्रभु ने आदि सृष्टि में ऋषियों के हृदय में ऐसे ही ज्ञान का प्रकाश किया जैसे वह आज करता है। आप नमक की बोरी कहीं रखिये। एक भी चींटी कभी उसके पास नहीं आती परन्तु कटोरी में थोड़ी खाण्ड कहीं रख दो। झट से एक के पीछे दूसरी और दूसरी के पीछे तीसरी सब चींटियाँ पंक्तिबद्ध खाण्ड के पास पहुँच जाती हैं। नमक और खाण्ड को चखकर जानता है कि यह क्या है परन्तु, अनपढ़ चींटियों को किसने यह ज्ञान दिया कि यह नमक है और यह खाण्ड है? सब मूक प्राणियों को जीवन के निर्वाह के लिए जन्म लेते ही आज भी सर्वव्यापक प्रभु आवश्यक ज्ञान देता है। मधुमक्खी को मधु बनाना उसी ने सिखाया है। मनुष्यों को सृष्टि के आदि में अपना नित्य अनादि ज्ञान वह प्रभु ऋषियों के हृदय में वैसे ही प्रकाशित करता है। हम सदा स्वामी सत्यप्रकाश जी का नाम लेकर ही यह उत्तर दिया करते हैं।

क्या हममें ऐसे दस बीस व्यक्ति हैं जिन्होंने स्वामी जी का नाम लेकर कभी कहीं यह मौलिक तर्क आगे पहुँचाया हो? हमारी कमी आज यह है कि हम स्वयं को पं. लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पूज्य उपाध्याय जी, स्वामी वेदानन्द जी और देहलवी जी से बहुत बड़ा मान बैठे हैं। हम भी देखते रहते हैं कि पं. धर्मदेव जी (स्वामी धर्मानन्द जी) के ग्रन्थ वेदों का यथार्थ स्वरूप का सारा माल उठाकर लिखने बोलने वाले श्री पण्डित जी का नाम लेकर कृतज्ञता का प्रकाश नहीं करते। बिन्दु उठाना, लहर चलाना हम भूल गये। हमने देखा कि कभी स्वाध्याय सुमन, स्वाध्याय सन्दोह, कुल्लियात आर्य मुसाफिर, दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह, धर्म का आदि स्त्रोत के आधार पर प्रचार की लहर चलती थी। आचार्य रामदेव जी, मेहता जैमिनि जी की शैली की यही विशेषता थी। अब हम अच्छे-अच्छे बिन्दु नहीं उठाते।

नारी सम्मान के बिन्दु:- एक बार ऋषि उद्यान में एक भजनोपदेशक दहाड़-दहाड़ कर भाषण दे रहा था। एक के बाद दूसरी कहानी सुना-सुना कर हंसा रहा था।

हम वेदी के समीप खड़े थे। एक विचारशील युवक ने आकर कहा, अब सुनना यह चक्की वाली माई की, नमाज में पिटाई की, जाट के कम्बल की कहानी सुनायेगा। यह स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. लेखराम जी के जीवन का कोई प्रसंग नहीं सुनायेगा और ठीक उसने अपनी रटी-रटाई कहानियाँ दोहरा दीं। महिला सम्मेलनों पर भाषणों में क्या कहा जाता है, यह सब जानते हैं।

गत कुछ वर्षों में हमने सुपठित श्रोताओं के लिये खोज करके नई सामग्री दी जिसे कोई इतिहासकार झुठला नहीं सका।

(१) विश्व की प्रथम महिला जिसके नाम पर कोई विश्व प्रसिद्ध संस्थान बना वह माता सरस्वती देवी थी जिसके नाम पर महाशय राजपाल ने लाहौर में अपना प्रकाशन संस्थान सरस्वती आश्रम स्थापित किया। महाशय जी के ही सुयोग्य बेटे दीनानाथ जी ने पौराणिक देव गाथा की सरस्वती के नाम पर इसे बताकर मेरे लेख का प्रतिवाद सा कर दिया। हमने महाशय जी के बलिदान पर उन्हीं के संस्थान से उस समय छपी उनके एक मित्र की पुस्तक खोज निकाली। उसमें हमारे कथन की पुष्टि में एक पैरा मिल गया।

(२) हमने खोजकर के दिया कि माता लाड कुँवर विश्व की पहली देवी थी जो आधुनिक काल में किसी संस्था की प्रधान चुनी गई। यह माता आर्य समाज रेवाड़ी की संस्थापक, प्रधान और राव युधिष्ठिर सिंह जी की पत्नी थी। तब इंग्लैण्ड में सब पुरुषों को भी वोट का अधिकार नहीं मिला था। एक स्वामी सुधानन्द जी रेवाड़ी ने अपने ग्रन्थ में यह बिन्दु उठाकर हमें तृप्त किया और आर्य समाज का गौरव बढ़ाया है।

(३) आचार्य प्रवर उदयवीर जी के दर्शनों के भाष्य का नाम 'विद्योदय' भाष्य है। विश्वप्रसिद्ध इस ग्रन्थमाला का नामकरण आचार्य जी ने अपनी पत्नी के नाम पर किया। दुर्भाग्य ही कहा जावेगा कि हम लोगों ने इस बिन्दु को कभी उठाया ही नहीं। सारे संसार के पुस्तकालयों में यह ग्रन्थमाला पहुँच गई है। हम लोगों को यह बता ही न पाये कि यह हमारी पूज्या माता विद्या देवी जी के नाम पर दर्शनों का भाष्य छपा है।

(४) विश्व प्रसिद्ध प्रथम विचारक, नेता तथा साहित्यकार पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय थे जिन्होंने अपनी पत्नी की जीवनी लिखी। हमने इसके पुनः प्रकाशन, सम्पादन के समय बड़ी जांच पड़ताल की क्या किसी और देवी का उसके पति द्वारा लिखित जीवन कभी छपा है या मिलता है? श्रीयुत् रमेश मल्होत्रा जी को साथ लेकर भी पूछताछ करते बड़े-बड़े प्रकाशकों से मिले परन्तु ऐसी कोई जीवनी न मिली।

इस्लाम में सत्यार्थप्रकाशः- कुछ वर्ष पूर्व एक मुसलमान विद्वान् कृपालु ने हमें अपना एक पठनीय ग्रन्थ भेंट किया। हमने इसे बहुत ध्यान से, प्रेम से पढ़ा। हमारे अनुसन्धान का यह निचोड़ रहा है कि महर्षि के अमर ग्रन्थ का लाभ सब ने उठाया है परन्तु इस ज्ञान अञ्जन का सर्वाधिक लाभ मुसलमानों को मिला है। यह हम कई बार लिख चुके हैं। यह बात अलग है कि मुसलमान गुड़ का स्वाद भी लेते चले आ रहे हैं और गन्ने को कोसते भी रहते हैं। उपरोक्त पुस्तक में हमने पढ़ा, चिह्नित भी किया। कुछ नोट भी लिए और 'कुरान सत्यार्थप्रकाश के आलोक में', पुस्तक में भी इसके प्रमाण दिये। तब इस पुस्तक को पढ़कर हमारे इस विचार को और अधिक बल मिला कि सत्यार्थप्रकाश का सबसे अधिक लाभ मुसलमानों ने ही उठाया है।

हमारा विचार बना कि इस ग्रन्थ को आधार बना कर 'कुरान सत्यार्थप्रकाश के आलोक में' पुस्तक जितनी एक और मौलिक व खोजपूर्ण पठनीय पुस्तक लिखी जावे। नाम भी मस्तिष्क में आ गया 'इस्लाम में सत्यार्थप्रकाश।' हम ऋषि जीवन के कार्यों में ऐसे खो गये कि उपरोक्त ग्रन्थ तथा अपनी परियोजना को ही भूल गये। इन दिनों एक आर्य युवक पर मुसलमानों ने अभियोग चलाया है। यह सूचना पाकर हमें उपरोक्त पुस्तक याद आ गई। इसे फिर से एक विहंगम दृष्टि से देखा। अपनी परियोजना फिर हृदय में विद्युत् समान कौंध गई। परोपकारिणी सभा को प्रस्ताव दिया कि सभा इसे प्रकाशित करे तो यह उत्तम व पठनीय पुस्तक सभा को प्रकाशनार्थ सौंप दी जायेगी। इसमें ऐसे-ऐसे उद्धरण पाठक पढ़ेंगे कि जिन्हें पढ़कर सब यही समझेंगे कि ये वाक्य स्वामी दर्शनानन्द, पं. चमूपति के ग्रन्थों से लिये गये हैं।

शेष भाग अगले अंक में.....

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते, इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१२ से १९ अक्टूबर, २०१४- **योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर),**
सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

ऋषि मेला - ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

।। ओ३म् ।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

अमर शहीद जोरावर सिंह

- श्री फतह सिंह मानव

श्री फतह सिंह मानव आर.ए.एस. (सेवानिवृत्त)द्वारा श्री लक्ष्मीनिवास झुन्झुनुवाले को लिखे पत्र में वर्णित 'भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम' सम्बन्धित तथ्यों पर आधारित ऐतिहासिक सामग्री- सम्पादक

आधुनिक भारत के ''स्वातन्त्र्य-संग्राम'' के इतिहास में भीलवाड़ा जिले के दूसरे नम्बर के शहर, शाहपुरा नगर के एक ही सौदा-बारहठ परिवार के तीन सदस्यों ने देश की स्वतन्त्रता हेतु अपने सर्वस्व की आहूति देकर, जैसा नाम कमाया है, उसकी देश में कम ही मिसाल मिलेगी। लोगों की मान्यता है कि यदि शाहपुरा के इस बारहठ-परिवार ने बंगाल की धरती पर जन्म लिया होता तो वहाँ की जनता, उसे सर आँखों पर उठा लेती।

प्रथम विश्व-युद्ध (सन् १९१४-१९) के प्रारम्भ होते ही अर्द्ध-स्वतन्त्र राज्य शाहपुरा के राजाधिराज नाहरसिंह जी ने अंग्रेज-शासकों को खुश करने के मकसद से शाहपुरा के प्रसिद्ध सौदा बारहठ परिवार के पुश्तैनी जागीर के गाँव ''देव-खेड़ा'' एवं उनकी गढ़-नुमा विशाल हवेली को जब्त कर लिया एवं उसके अन्दर रखे हुए बर्तन तक नीलाम करवा दिये। राजस्थान में सबसे बड़े दुर्लभ-ग्रन्थों और Manuscripts के भण्डार ''कृष्ण-भारती-पुस्तक भवन'' को जब्त कर, राजाधिराज ने अपने महलों मँगवा लिया। इस प्रकार, राजाधिराज नाहरसिंह जी ने राजस्थान के एक सम्पन्न एवं विद्वान्-परिवार को दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर कर दिया।

१५ अगस्त, सन् १९४७ को, जैसे ही भारत स्वतन्त्र हुआ, शाहपुरा अर्द्ध-स्वतन्त्र राज्य के प्रथम लोक-प्रिय प्रधान-मन्त्री श्री गोकुल लाल जी आसावा और उनके मुख्य-सचिव श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा ने स्व. श्री कृष्णसिंह जी की हवेली को उनके वंशजों को लौटा दी। परन्तु उस समय तक कृष्णसिंह जी के तीनों पुत्र, क्रान्तिकारी केसरीसिंह जी, क्रान्तिवीर जोरावरसिंह जी एवं प्रसिद्ध इतिहासज्ञ किशोरसिंह जी (State Historian, Member of Royal Asiatic Society, London) का निधन हो चुका था। अत: उनके परिवार से श्री केसरीसिंह जी के द्वितीय पुत्र श्री रणजीतसिंह जी और उनकी पौत्री, स्वतन्त्रता सेनानी कुमारी नगेन्द्रबाला जी उस अवसर पर शाहपुरा गये थे।

देश स्वतन्त्र होने के पश्चात्, महान् क्रान्तिकारी केसरीसिंह जी के जन्म-शताब्दी वर्ष, १८ नवम्बर, सन् १९७२ के अवसर पर विशाल-हवेली को एक Protected Monument घोषित कर दिया और इसे अजमेर के म्यूजियम-विभाग के अधीक्षक के अधिकार में दे दिया।

शाहपुरा नगर में अन्तर्राष्ट्रीय रामद्वारा के पास ही एक बड़े चौक को ''त्रिमूर्ति चौक '' नाम दिया गया है, जहाँ इन तीनों क्रान्तिकारियों की मूर्तियाँ लगी हुई हैं। क्रान्तिकारी ठाकुर केसरीसिंह जी के Statues जयपुर के Information Centre, कोटा नगर में National High Way पर बड़े तालाब के तिराहे पर एवं जोधपुर और सीकर के ''चारण-छात्रावास '' में लगे हुए हैं। शाहपुरा नगर के उत्तर में मुख्य-सड़क पर स्थित कॉलेज को ''बारहठ प्रतापसिंह स्नातकोत्तर कॉलेज'' नाम दिया गया है, जिसका मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल जी सुखाडिया ने विधिवत् उद्घाटन किया था यहाँ पर अमर-शहीद कुँ. प्रताप की एक सुन्दर मूर्ति लगी हुई है। शाहपुरा नगर में जो एक-मात्र गर्ल्स हायर सैकण्डरी स्कूल है, उसका नाम ''वीर माता मणिक कँवर गर्ल्स हाई स्कूल'' रखा गया है।

देश के क्रान्तिकारी-युवकों के पास भावनाओं का जज्बा तो था परन्तु धन का नितान्त अभाव था। बिहार के एक देश-भक्त सज्जन ने श्री अर्जुनलाल जी सेठी को ''वर्द्धमान विद्यालय'' में आकर बताया कि बिहार के आरा जिले के पास ही नीमेज नामक गाँव में एक मठ है, जिसके महन्त के पास बहुत-सारा धन है। यह धन, जनता द्वारा भेंट किया गया है और यदि वही धन जनता के लिए ही स्वतन्त्रता-संग्राम के लिए काम आये तो इससे बढ़कर जनता के उस धन का और कुछ शुभ उपयोग नहीं हो सकता। इस पर श्री सेठी जी ने अपने शिष्यों में से शोलापुर, महाराष्ट्र के दो नवयुवक मोतीचन्द और कान्तिचन्द्र को आरा भेजा और क्रान्तिकारी ठाकुर केसरीरसिंह जी ने अपने अनुज जोरावरसिंह, जो शरीर में बहुत बलिष्ठ था, उन दोनों के साथ भेजा। इन तीनों क्रान्तिकारियों का कत्तई इरादा नहीं था कि महन्त की हत्या की जाय, वे तो केवल देश के काम के लिए धन चाहते थे। परन्तु अन्त में हुआ यह कि महन्त से तिजोरी की चाबी माँगते समय उसने देने से साफ इन्कार किया, जिस पर उन तीनों क्रान्तिकारियों से उसने जोर-जबरदस्ती की, जिसमें जोरावरसिंह की कटारी से वह महन्त मारा गया। पुलिस ने मोतीचन्द्र और जयचन्द्र को तो वहीं मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया और आरा जिले के ब्रिटिश सैशन जज ने मोतीचन्द्र और जयचन्द्र को

फाँसी की सजा दी और वे दोनों ही युवक, मातृभूमि के लिए शहीद हो गये। लेकिन श्री जोरावरसिंह, पुलिस की आँख से न जाने कैसे ही बच निकला। सैशन जज ने मुल्जिम जोरावरसिंह के लिए यह आज्ञा पारित की कि मुल्जिम जोरावरसिंह बारहठ, जहाँ भी और जब भी गिरफ्तार किया जाय, उसे फाँसी दे दी जाय और उसके लिए फिर किसी भी तरह के ट्राईल की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार जोरावरसिंह बारहठ, सन् १९०४से सन् १९३९ तक अपनी मृत्यु-पर्यन्त, पैंतीस साल तक ब्रिटिश पुलिस की गिरफ्त में नहीं आ सका। पैंतीस साल तक जोरावरिसंह बारहठ के सर पर डेथ वारण्ट होते हुए भी, वह ब्रिटिश पुलिस द्वारा गिरफतार नहीं किया जा सका । यह भी अपने आप में एक रेकार्ड हैं। वह सर पर कफन बाँधे, पर्वत-श्रेणियों और वन-बीहड़ों में विचरण करता रहा।। नियति को जोरावरसिंह के हाथ से एक और महत् कार्य, मातृ-भूमि के हित के लिए करवाना शेष था।।

इस प्रकार, जोरावरसिंह बारहठ शाहपुरा, सन् १९०४ से मृत्यु-पर्यन्त, निडर होकर विचरण करता रहा और एक बार पुनः दि. २३ दिसम्बर १९१२ को दिल्ली में नव-नियुक्त वाइसरॉय लॉर्ड हार्डिंज पर पुरानी दिल्ली के चाँदनी-चौक स्थित ''पंजाब नेशनल बैंक'' की इमारत की प्रथम मन्जिल-से बम-प्रहार किया और उसने बहादुरी का ऐसा इतिहास रचा, जिसकी देश में दूसरी अन्य मिशाल नहीं है।

इस बम फेकने वाली घटना का स्वयं श्री जोरावरसिंह जी ने इस प्रकार वर्णन किया- ''एक दिन, जब हमारी पार्टी में यह तय हुआ कि वाइसरॉय पर बम प्रहार करने का बहादुरी का काम कौन करेगा तो मैंने कहा, यह काम तो मैं ही करूँगा, चाहे इस प्रयास में मेरे प्राण ही चले जाये। इसके बाद, मैंने अपने गाँव में छोटे-छोटे पत्थरों से निशाना साधने का अभ्यास प्रारम्भ किया और लगातार छह महीने तक अभ्यास जारी रखा और मुझे पूरा विश्वास हो गया कि अब मैं किसी भी प्रकार निशाना नहीं चूकूँगा । इसके बाद, जब नव-नियुक्त वाइसरॉय लार्ड हार्डिंज की राजधानी दिल्ली में दिनांक २३ दिसम्बर १९१२ को प्रथम राजकीय प्रविष्टि हुई तो मैं दिल्ली के मशहूर ''चाँदनी-चौक'' में स्थित ''पंजाब नेशनल बैंक'' की प्रथम मन्जिल जहाँ केवल महिलायें ही बैठी थीं, वहाँ पर बुर्का ओढ़-कर हाथ में बम लेकर बैठ गया एवं जैसे ही वाइसरॉय लॉर्ड हार्डिंज की सवारी का हाथी, बैंक की बिल्डिंग के सामने आया, मैंने उस पर बम का निशाना साधा कि उसी समय मेरे हाथ के एक महिला का टल्ला लग गया, जिससे मेरा निशाना थोड़ा-सा चूक गया लेकिन वाइसरॉय के पीछे सोने (स्वर्ण) का छत्र लिए खड़ा रामपुर रियासत (यू.पी.)का जमादार हाथी पर ही ढेर हो गया। वाइसरीन लेडी हार्डिंज के भी एक दो छर्रे लगे लेकिन वाइसरॉय बाल-बाल बच गये। जैसे ही बम फूटने क धमाका हुआ, भीड़ में से किसी देश-भक्त ने जोर से आवाज लगाई शाबाश बहादुर। जब यह खबर, समाचार-पत्रों में दूसरे दिन अमेरिका में प्रकाशित हुई तो वहाँ पर भारतीयों ने खुशी के मारे आपस में मिठाइयाँ बाँटी। बम का धमाका इतना जोर से हुआ था कि घटना-स्थल से तीन-किलोमीटर दूर ''जामा मस्जिद'' की सीढ़ियों पर बैठे लोगों को अच्छी तरह सुनाई दिया।''

इस घटना का विवरण, जब दूसरे दिन, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने लाहौर में पढ़ा तो उन्होंने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए ''जिस किसी भारतीय देशभक्त ने वाइसरॉय लॉर्ड हार्डिंज पर बम फैंका है, उसकी बहादुरी और साहस का कोई सानी नहीं है, जिसने विश्व पर एक-छत्र राज्य करने-वाली ग्रेट ब्रिटेन की सैन्य-शक्ति को प्रबल चुनौती दी है। इससे बढ़कर और कोई बहादुरी का काम हो ही नहीं सकता था।।''

जैसे ही क्रान्तिवीर जोरावरसिंह बारहठ द्वारा, दिनांक २३ दिसम्बर को वाइसरॉय लॉर्ड हार्डिंज पर दिल्ली के चाँदनी-चौक में बम प्रहार की घटना, दैनिक समाचार प्रकाशित हुए तो ब्रिटिश-साम्राज्यवाद के पोषक, देश की सभी राजा-महाराजाओं, नवाबों और हैदराबाद के निजामल्मुल्क ने अपनी-अपनी रियासतों की तरफ से अखबारों में घोषणाएँ प्रकाशित करवाई कि, जो भी व्यक्ति वाइसरॉय पर बम-प्रहार करने-वाले व्यक्ति को गिरफ्तार करवायेगा, उसे उनकी रियासत की तरफ से इतना भारी इनाम दिया जायेगा। इन घोषणाओं की राशि का योग कई लाख रुपयों में था। इस सूची को National Archieves, नई दिल्ली के रिकॉर्ड में देखा है।

क्रान्तिकारी जोरावरसिंह बारहठ ने दिल्ली से रवाना होकर, बहुत तेजी से चल कर पूरा ''थार का रेगिस्तान'' पार कर, एक हजार किलोमीटर की दूरी पर स्थित सिन्ध प्रान्त के प्रसिद्ध शहर ''ऊमरकोट'' में जाकर ही विश्राम लिया। इस दर्म्यान, जोरावरसिंह जी ने कहाँ रात्रि में विश्राम किया होगा, किसने उन्हें खाना खिलाया होगा आदि-आदि का कुछ पता नहीं लेकिन, भूखे-प्यासे जोरावरसिंह जी दिल्ली से इतने दूर चले गये थे कि अंग्रेज सरकार की पुलिस भी इतनी मुश्तैदी से वहाँ नहीं पहुँच सकती थी।

इस समय, फरार जोरावरसिंह बारहठ की क्या तस्वीर रही होगी, इस पर थोड़ा-सा गौर करें। जोरावरसिंह, स्वर्गीय कृष्णसिंह बारहठ, शाहपुरा का सबसे छोटा पुत्र था और

उसका बड़े ही लाड-प्यार से पालन पोषण हुआ था। जोधपुर के महाराजा साहिब, राज-राजेश्वर जसवंतसिंह जी ने कृष्णसिंह जी को पीढ़ियों-पर्यन्त पाँवों में स्वर्णाभूषण पहिनने की इज्जत बक्षीस की थी, जो उस समय बहुत बड़ी इज्जत का प्रतीक थी। पार्थिव-दृष्टि से स्वर्गीय कृष्णसिंह जी बारहठ के यहाँ किसी भी प्रकार की कमी नहीं थी। जोरावरसिंह का एकदम गौरवर्ण था, उसका कद छह फीट ऊँचा एवं शारीरिक-दृष्टि से वह बड़ा ही बलिष्ठ था। यद्यपि भौतिक दृष्टि से जोरवरसिंह को किसी भी प्रकार की कमी नहीं थी, फिर भी उसने अपने जीवन में ऐसे भयावह अग्नि-पथ को चुना और भारत के वाइसरॉय पर बम-प्रहार करने का अत्यन्त साहसपूर्ण कार्य किया। धन्य है भारत के ऐसे महावीर क्रान्तिकारी-सपूत को।

फरारी का लम्बे जीवन को बिताने के लिए श्री जोरावरसिंह जी के लिए राजस्थान की सीधी-सपाट भूमि, शरणगाह के लिए नितान्त अपर्याप्त थी इसलिए उन्होंने अन्ततः विन्ध्याचल-पर्वत की उत्तंग -श्रेणियों से परिवेष्ठित मध्य-प्रदेश की राठौड़ क्षत्रियों की सीतामऊ रियासत को पसन्द किया। यहाँ पर सजातीय चारण-सरदारों की जागीर के सात-आठ गाँव थे एवं बाकी गाँव राजपूत-सरदारों के गाँव थे और दोनों में आपसी सनातन-रिश्ता बहुत गहरा घुला-मिला हुआ था। उस समय, वहाँ के महाराजा थे, राजर्षि रामसिंह जी।

श्री जोरावरसिंह जी, वाइसरॉय लॉर्ड हार्डिंज पर बम फैंकने के बाद ऐसे लापता हुए कि छह-सात साल तक तो घर-वालों को यह पता ही नहीं चला कि वे जिन्दा भी हैं या मर गये। इस लम्बी-अवधि में जोरावरसिंह जी के रहने के सम्बन्ध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कि वे भूमिगत कहाँ रहे होंगे। इस बात की कल्पना-मात्र से ही हृदय में रोमांच होता है। सात वर्ष बाद जब, वे सीतामऊ रियासत में चारणों के गाँवों में दिखाई दिये और राजर्षि महाराजा रामसिंह जी को खुफिया पुलिस द्वारा सूचना मिली कि ब्रिटिश गवर्न्मेंट का एक खौफनाक मुल्जिम, जोरावरसिंह बारहठ शाहपुरा, उनकी रियासत में छिपा हुआ है तो उन्होंने रवानगी तौर पर कहलवाया कि वह उनकी रियासत की सीमा छोड़ कर जल्दी ही कहीं अन्यत्र चला जाय। इस पर जोरावरसिंह ने महाराजा साहिब को महान् संत अब्दुल रहीम खानखाना का निम्नलिखित दोहा लिख कर

''सर सूखे, पंछी उडै, ओर हिं सर ठहराय।
मच्छ कच्छ बिन पच्छ के कहो ''रहीम'' कित जाय?''

भावार्थः- ''जब, सरोवर का पानी सूख जाता है तब पक्षी तो उड़ कर कहीं दूसरे सरोवरों में चले जाते हैं परन्तु ''रहीम'' कहता है कि उस सरोवर में रहने-वाले मगरमच्छ और कछुए कहाँ जाये? उनके लिए तो अन्य कोई आश्रय-स्थल ही नहीं है।'' रहीम के उपरोक्त दोहे ने महाराजा साहिब पे बन्दूक की गोली का सा असर किया। आखिर, सहृदय महाराजा साहिब का हृदय पसीज उठा और उन्होंने जोरावरसिंह के कार्य का सही मूल्याँकन करते हुए अपनी मधुर मालवी भाषा में फरमाया ''अणीं शक्ष, काम तो अस्यों करॅयो के अणीं री पूजा की जाय परन्तु कई करॉं, राज अँगरेजों रौ है, अणीं वास्ते उँण नै चाहीजै के वो सावचेती सूँ रेवै।'' महाराजा साहिब की तरफ से यह अभय-वरदान मिल जाने पर तो जोरावरसिंह जी ने अपना शेष-जीवन सीतामऊ रियासत के गाँवों में ही बिताया। यहाँ पर समाज के सभी-वर्गों में जोरावरसिंह जी का बहुत आदर-सम्मान था। इस रियासत के गाँव ''सामल-खेडा'' में कालान्तर में उनकी मूर्ति लगायी गयी। यहाँ पर, उन्हें अमरदास बैरागी या अमरसिंह के छद्म-नामों से जाना जाता था।

कालान्तर में भूतपूर्व प्रतापगढ़ रियासत में स्थित, गाँव संचेई के ठाकुर श्रीजगमालसिंह जी मेहडू ने बताया था कि एक बार श्री जोरावरसिंह जी संन्यासी के वेष में कहीं बहुत दूर से आकर ठहरे। उनकी जूतियों में खून भरा हुआ था। इसके कुछ समय पूर्व, वे मन्दसौर से कहीं जा रहे थे कि पुलिस के दो सिपाहियों ने उनका पीछा किया तो वे रास्ते में पड़ने-वाली नदी में छिप गये और उन्होंने दो दिन व दो रात तक ''कीरों'' के साथ ककड़ी व खरबूजे खाकर ही अपनी क्षुधा शान्त की। इस बार, श्री जोरावरसिंह जी सँचेई पहुँचे तो वे संन्यासी के वेष में थे और मन्दिर में ठहरे। फिर, दो-तीन दिन बाद रावळे में आ गये। यहाँ के ठाकुर जगमालसिंह जी, मेहडू, जोरावरसिंह जी को अपना सद्गुरु मानते थे। उन्होंने ही श्री जोरावरसिंह जी का एक फोटो खिंचवाने का प्रबन्ध किया। उनका एक-मात्र यही फोटोग्राफ है अन्यथा उनका आज कोई फोटोग्राफ ही नहीं होता। एक दिन, जोरावरसिंह जी ने जगमालसिंह जी से पूछा ''क्या तुमने सुना है कि किन्हीं दो चारणों ने वाइसरॉय लॉर्ड हार्डिंज पर दिल्ली के चाँदनी-चौक में बम प्रहार किया था?'' इस पर जोरावरसिंह जी ने आत्म-स्वीकृति देते हुए बताया कि यह ''करतुत'' इसी शरीर की थी।

'मातृ कृपा', १३, शास्त्री नगर, अजमेर (राज.)
चलभाष- ०९३१४४६७७९०

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३१ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ३१ अक्टूबर तथा १-२ नवम्बर, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है - महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३१वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ - २७ अक्टूबर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २ नवम्बर को होगी। यज्ञ के **ब्रह्मा डॉ. वागीश, मुम्बई** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तरराष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है-**भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ३१ अक्टूबर, १-२ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता - प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गतवर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ३१ अक्टूबर को परीक्षा एवं १ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१४ तक 'आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि-उद्यान, अजमेर' इस पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान-समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती है, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३१ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्-आचार्य बलदेव जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपाल जी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी जी-शिवगंज, डॉ. राजेन्द्र जी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी-मेरठ, डॉ. कृष्णपालसिंह जी-जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री सत्यपाल जी पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह जी आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	धर्मवीर	ओम मुनि
प्रधान	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

वैदिक प्रतीकवाद

- डॉ. प्रियंवदा वेदभारती

प्रतीक शब्द का अर्थ तथा प्रतीकों की उपयोगिता- प्रतीक शब्द वैदिक वाङ्मय से लेकर लोक व्यवहार तक प्रचलित तथा प्रसिद्धार्थक है। यद्यपि कोशकारों ने इसके विभिन्न अर्थ किये हैं परन्तु प्रकृत प्रसंग में ''**प्रत्येति प्रत्याय्यते वा येन तत् प्रतीकम्**'' जिसके द्वारा किसी वस्तु या सूक्ष्म रहस्य का स्पष्टतया बोध हो उस प्रत्यायक चिह्न को 'प्रतीक' कहना अधिक समीचीन होगा। मनुस्मृति में प्रतीक के पर्यायवाची के रूप में आत्मा तथा मूर्ति शब्द प्रयुक्त किये गये हैं यथा-

आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
दयाया भगिनी मूर्तिः धर्मस्यात्मातिथिः स्वयम्।
माता पृथिव्या मूर्तिः भ्रातास्वो मूर्तिरात्मनः।।

(१२/१२०)

प्रतीक के साथ प्रत्यायनीय का अविनाभाव सम्बन्ध है। प्रतीक प्रत्यक्ष है, प्रत्यायनीय परोक्ष है, प्रतीक स्थूल है, प्रस्यायनीय सूक्ष्म है। प्रत्यायनीय सूक्ष्म परोक्ष तत्त्व को किसी प्रसिद्ध प्रत्यक्ष पदार्थ द्वारा व्याख्यान करना ही प्रतीकवाद है। तद्यथा- पुरोडाश को मस्तिष्क का प्रतीक, वसन्तादि ऋतुओं को ब्राह्मणादि वर्णों का प्रतीक, जल को सत्य या पवित्रता का प्रतीक, नारी को वेदि का प्रतीक और यज्ञ को विष्णु का प्रतीक मानकर व्याख्यान किया जाये तो बात सुगमता से हृदयंगम हो जाती है। ''**परोक्ष प्रिया हि देवाः प्रत्यक्षद्विषः**'' इस वैदिक सूक्ति के आधार पर देवता लोग परोक्ष प्रिय होते हैं, प्रत्यक्ष प्रिय नहीं। काव्य में भी अभिधा में कही हुई बात का उतना महत्त्व नहीं होता जितना लक्षणा और व्यञ्जना में अभिव्यक्त बात का। सम्भवतः इसीलिए वेद तथा वैदिक वाङ्मय में प्रतीकों का आश्रयण लिया गया ।

रूपकालङ्कार तथा उपमालङ्कार की प्रतीक शैली में बहुत कुछ समानता है पुनरपि कुछ भिन्नतायें भी हैं। उपमा में उपमान कभी उपमेय नहीं बन सकता, उपमान सदा उपमेय से विशिष्ट रहेगा। किन्तु प्रतीक शैली में दोनों एक दूसरे के स्थान में प्रयुक्त किये जा सकते हैं। ''**यज्ञो वै विष्णुः विष्णुर्वै यज्ञः**'' दोनों पद परस्पर उपमान भी हैं उपमेय भी हैं। कुछ ऐसी ही बात रूपकालङ्कार में भी है। उपमेय में उपमान का आरोप करना रूपकालङ्कार कहाता है। उपमालङ्कार के समान रूपकालङ्कार में भी उपमान-उपमेय का अपना-अपना स्थान सुरक्षित रहता है। चरणों को कमल तो कहा जा सकता है पर कमल को चरण कदापि नहीं, पर प्रतीक पद उभयरूप धारण कर लेते हैं। प्रतीकों का यही वैशिष्ट्य उन्हें उपमा तथा रूपक से पृथक्ता प्रदान करता है और वैदिक, लौकिक साहित्य में प्रतीकवाद को जन्म देता है।

वेदों में प्रतीकों का अस्तित्व- यद्यपि वैदिक संहिताओं में 'प्रतीक' शब्द और प्रतीकों का नामतः उल्लेख न्यून ही हुआ है तथापि प्रतीक शैली बहुत स्थलों पर दृष्टिगोचर होती है। उदारणार्थ यजुर्वेद का प्रसिद्ध मन्त्र है-

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

(३१/१२)

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

(३१/१३)

यहाँ ब्रह्माण्ड का पिण्ड में प्रतीकात्मक वर्णन है। ब्रह्माण्ड का आह्लादक चन्द्रमा देहधारियों का मन है, सूर्य चक्षु है, प्राण स्वरूप वायु श्रोत्र का प्रतीक है, मुख अग्निस्वरूप है द्युलोक और पृथिवीलोक के मध्य दृश्यमान अन्तरिक्ष इस शरीर में नाभि है, द्युलोक हमारे सिर के तुल्य है, सर्वाधार पृथिवी पैरों की प्रतिकृति है। सकल दिशाओं का सूक्ष्मरूप कर्णशष्कुली का अवकाश है। गुण साधर्म्य के कारण पिण्ड ब्रह्माण्ड की प्रतिकृति या प्रतीक कहलाया। '**यत्पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे**' ''**पिण्ड ब्रह्माण्डयोरैक्यम्**'' जैसे वचनों का आधार यही गुणसादृश्य है। यजुर्वेद की भाँति अथर्ववेद में भी-

अश्वाः कणा गावस्तण्डुला मशकास्तुषाः।
श्याममयोस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम्।

(११/३/५,७)

धाना धेनुरभवत् वत्सो अस्यास्तिलोऽभवत्।

(१८/४/३२)

आदि मन्त्रों में चावल के कण को अश्व, तण्डुल को गौ, तुष (भूसी) को मशक, चावलों के श्यामल भाग को माँस और धेनु और तिलों को उसके छोटे-छोटे बछड़ों के रूप में वर्णित किया है। इस प्रकार संहिता ग्रन्थों में स्पष्ट प्रतीकों का उल्लेख प्राप्त होता है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतीक- वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतीकों का प्राचुर्य है। चक्षुर्वैजमदग्निः प्राणो वै वसिष्ठः मनो वा भारद्वाज ऋषिः, पशवो घृतम्, अन्नं वै गौः, वज्रो वा आज्यम् संवत्सरो हि वज्रः, अग्निर्वै देवानां मुखम् सत्यं वै देवाः अनृतं मनुष्याः, यजमानो वै यूपः आदि सहस्रशः प्रतीक वचन उपलब्ध होते हैं। इन सभी प्रतीकों के आधार वेदमन्त्र ही हैं। ब्राह्मण ग्रन्थ प्रतीकों को उपस्थित करके प्रत्यायनीय तक भी पहुँचाते हैं। अग्निहोत्र दर्शपौर्णमास से लेकर अश्वमेध याग पर्यन्त समस्त योगों का ब्रह्मण ग्रन्थों के प्रतीकों के आधार पर विवेचन किया जाये तो स्पष्ट प्रतीत होता है इनका प्रत्यायनीय पिण्ड तथा ब्रह्माण्डगत रहस्यों का अन्वाख्यान ही है। दूसरे शब्दों में ये सभी प्रतीक नाटक हैं। श्रौत कर्मकाण्ड तीन अग्नियों में निष्पन्न किये जाते हैं। उन अग्नियों के नाम हैं **(१)**आहवनीयाग्नि **(२)** गार्हपत्याग्नि **(३)** दक्षिणाग्नि। आहवनीयाग्नि सौर अग्नि का, गार्हपत्याग्नि पार्थिव अग्नि का और दक्षिणाग्नि अन्तरिक्षस्थ अग्नि का प्रतीक माना गया है। ब्रह्माण्ड की भाँति इस शरीर में भी तीन अग्नियाँ स्थापित हैं। शरीर में गार्हपत्य अग्नि वीर्य है। आहवनीय अग्नि ओज और दक्षिणाग्नि जठराग्नि है। सभी यागों में जौ या चावल के आटे से पुरोडाश बनाने का विधान है। ब्राह्मण ग्रन्थों में पुरोडाश के अनेक प्रतीकात्मक अर्थ बताये गये हैं। तद्यथा-

संस्कारों में सम्पादित अन्न विशेष, यज्ञ का अर्ध भाग, मस्तिष्क, पशुओं का मेध आदि । यहाँ विशेष उल्लेखनीय है-

''शिरो वा एतद् यज्ञस्य यत् पुरोडाशः।''

(श. ब्रा. १/२/१२)

''यथा मस्तिष्क एवं पुरोडाशः''

(मै. सं. ४/१/१)

समाज व राष्ट्र के लिये उत्तम मस्तिष्क वाले बालक कैसे तैयार किये जायें यह बात पुरोडाश के प्रतीक से बताई गई है। जिस प्रकार सिर के कपालों के मध्य सुकोमल मस्तिष्क सुरक्षित होता है। बालक के मस्तिष्क के निर्माण हेतु माता-पिता के संकल्प के अनुसार ही पुरोडाश के कपालों की संख्या का यज्ञ में विचार किया गया है। ब्राह्मणत्व की साधना करने वाले छात्र को अष्टाकपाल पुरोडाश अपेक्षित है क्योंकि ब्रह्मवर्चस् को प्रदान करने वाली गायत्री में आठ अक्षर हैं। त्रिष्टुप् छन्द क्षात्र धर्म का प्रतीक है। इसके ग्यारह अक्षर एकादश कपाल वाले पुरोडाश का बोध करा रहे हैं, इसी प्रकार जगती छन्द वैश्य वर्ण का सूचक है, इसके बारह अक्षर द्वादश कपाल वाले पुरोडाश का बोध कराते हें। तात्पर्य यह कि आठ वर्ष की आयु तक ब्राह्मण बालक, ग्यारह वर्ष की आयु तक क्षत्रिय बालक और बारह वर्ष की आयु तक वैश्य बालक के वर्ण संकल्प का निर्णय हो जाना चाहिये। भारतीय ऋषि-मुनियों ने सन्तति के सर्वांगीण विकास हेतु कितना अद्भुत चिन्तन किया यह दर्शयाग और पौर्णमास याग की विधियों से ज्ञात होता है।

यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि दर्शपौर्णमास याग अन्य सभी यागों की प्रकृति है अर्थात् अन्य यागों में भी दर्शपोर्णमास की पुरोडाश निर्माणादि क्रियायें यथा विधि होती हैं अतः सन्तान निर्माण के चिन्तन को अन्य यागों में भी अनुस्यूत मानना चाहिए।

ब्राह्मण ग्रन्थों में मन्त्रार्थों को खोलने के लिए प्रतीकों के साथ-साथ प्रतीकात्मक आख्यान भी रचे गये। ऋषेर्दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याख्यानसंयुक्ता। वृत्र-वृत्रासुर कथा, मनु ऋषभ कथा, त्रिशीर्षा-विश्वरूप कथा, पुरोडाश-कथा, देवासुर संग्राम कथा, देवासुर पृथिवी विभाजन कथा आदि अनेक ऐसी कथायें हैं जो ऐतिहासिक न होते हुये मात्र प्रतीकात्मक हैं, मन्त्र गत रहस्यों को सरस शैली से प्रकट करने वाली हैं।

गृह्य सूत्रों में प्रतीकात्मक विधियाँ- उपनयन-चूडाकर्म-विवाहादि वैदिक संस्कारों में अनेक ऐसे वैदिक विधान हैं जो प्रतीक ज्ञान के बिना निरर्थक से लगते हैं, उदाहरणार्थ कुछ विधियाँ प्रस्तुत हैं-

१. उपनयन संस्कार में आचार्य द्वारा अपनी अञ्जली में 'आपोहिष्ठा' आदि तीन मन्त्रों से जल भरकर बालक की अञ्जलि में डालना, पश्चात् अंगुष्ठ सहित जल को विस्तृत पात्र में गिराने का तीन बार विधान है। यह क्रिया क्रीडा सी प्रतीत होती है यदि इसके प्रतीक पर ध्यान न दिया जाये। जल यहाँ ज्ञान का प्रतीक है आचार्य उस ज्ञान को पहले स्वयं सञ्चित करके शिष्य को देता है पुनश्च अञ्जलि से जल गिराते हुये यह निर्देश देता है- इस ज्ञान को अन्यों को भी वितरित करना, अपने तक सीमित न रखना। इसी प्रकार ''सूर्यस्यावृतमन्वावर्त्तस्व'' कहकर शिष्य द्वारा आचार्य की प्रदक्षिणा का विधान भी तब तक उचित प्रतीत नहीं होता जब तक आचार्य को सूर्य का प्रतीक न मान लिया जाये।

२. मधुपर्क में मधु माधुर्य का, दधि शीतलता का तथा घृत स्नेह का प्रतीक है। विवाह में वर महोदय को मधुपर्क

समर्पित कर कन्या मानो पति के दीर्घायुष्य हेतु शीतल मधुर स्नेहमयी वाणी के प्रयोग का संकल्प लेती है।

३. विवाह संस्कार में लाजाहोम एक अवान्तर होम है जो कि पौराणिक तथा वैदिक दोनों विधियों में अनिवार्य है। यहाँ लाजायें प्रतीक है कन्या के त्यागपूर्ण जीवन की। कन्या अपने मातृकुल का मोह तथा सुख सुविधाओं का परित्याग कर पति-कुल के सौभाग्य-समृद्धि हेतु अपने जीवन को समर्पित कर देती है।

४. शिलारोहण विधि में शिला प्रतीक है दृढ़ता की। वधू का पैर शिला पर रखवाना पारिवारिक जीवन में आने वाली विविध कठिनाइयों में पाषाण के सदृश रहने का सदुपदेश देता है।

५. सप्तपदी विधि- **'इषे एकपदी भव'** आदि सात मन्त्रों द्वारा रखे हुए सात कदम वर वधू को अन्न, शक्ति, सुख, प्रजा, ऋतुचर्या तथा मैत्री भाव को प्राप्त करने का सारगर्भित सन्देश देते हैं। ये उदाहरण तो निदर्शन मात्र हैं। इसी प्रकार अन्य संस्कारों मे भी प्रतीकात्मक विधियों द्वारा अनेक जीवनोपयोगी सन्देश दिये गये हैं।

वैदिक प्रतीकवाद की यह चर्चा अपूर्ण ही मानी जायेगी यदि इसमें ख्यातनामा वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द, आचार्य सायण प्रभृति वेदज्ञों का सश्रद्ध स्मरण न किया जाये अत: यहाँ प्रस्तुत है इनमें से कतिपय वेदज्ञों के महनीय कृतित्व के आधार पर स्वल्प विवेचन-

वेदभाष्यकार सायण विशेष रूप से याज्ञिक प्रक्रिया पूरक ही वेदमन्त्रों का अर्थ करते हैं पुनरपि ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रतीकों को उद्धृत करते हुये कहीं-कहीं उन्हें स्पष्ट करने का श्लाघनीय प्रयास भी करते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती यद्यपि नैरुक्त प्रक्रिया के वेदभाष्यकार हैं, प्रतीकों की व्याख्या करना उनका लक्ष्य नहीं है पुनरपि वे अपने वेदभाष्य तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में प्रतीक ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण के प्रचुर उदाहरणों के साथ प्रतीक शैली को भी यत्र-तत्र आश्रित करते हुये दिखाई देते हैं-

तद्यथा-यजुर्वेद के देवस्य त्वा सवितु: (१/१०) आदि प्रथमाध्यायस्थ मन्त्रों में ''बाहुभ्याम्'' का अर्थ बल, वीर्य, दृढ़ता; ''हस्ताभ्याम्'' का अर्थ ग्रहण और त्याग या प्राण और अपान; 'बाहु:' का अर्थ किरण समूह; 'दक्षिण:' का अर्थ दाहिना हाथ न करके अर्जन का प्रतीक मानना प्रतीक शैली को स्पष्ट संकेतित करता है। इसी प्रकार ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ग्रन्थ प्रामाण्याप्रामाण्य आदि प्रकरणों में रूपकालंकार तथा प्रतीक शैली के आधार पर ऋषि ने अनेक पौराणिक मिथ्या कथाओं का सत्य स्वरूप समुद्घाटित किया है।

स्वामी दयानन्द के पश्चात् आधुनिक युग में वैदिक तत्त्वज्ञान के आविष्कर्त्ताओं में योगिराज अरविन्द को प्रमुख रूप से लिया जाता है। श्री अरविन्द स्वामी दयानन्द की वेद भाष्य शैली के पूर्ण प्रशंसक हैं। वे कहते हैं-

''युगों -युगों की मिथ्या धारणा के बीच दयानन्द की ही वह प्रत्यक्ष दृष्टि थी जिसने सारे अन्धकार को चीरते हुये उसको पकड़ लिया जो सार था, उन्होंने उस-उस द्वार की कुँजी ढूँढ ली जिसे काल ने बन्द कर दिया था और उन्होंने उसके भीतर ज्ञान-विज्ञान के जो उत्स बंद थे उनकी सीलबन्दी को तोड़ दिया।''

अरविन्द जी का मानना है कि सम्पूर्ण वेद गूढ़ आन्तरिक प्रतीकों का ग्रन्थ है जो कर्मकाण्डमय कविताओं के संग्रह का छद्मवेष धारण किये हुए है। उनके अनुसार अग्नि का अर्थ-शक्ति, बल, संकल्प, ज्वाला है। हमारी मर्त्यसत्ता के अन्दर अमर्त्य अतिथि है, पुरोहित है, पृथिवी और द्यौ के बीच मध्यस्थता करने वाला है। जो कुछ हम हवि प्रदान करते हैं उसे यह उच्चतर शक्तियों तक ले जाता है और बदले में उनकी शक्ति प्रकाश और आनन्द हमारे अन्दर ले आता है। इसका कार्य अपनी धारा को पृथिवी से द्यौ तक ले जाना है। दूसरा ध्रुव है इन्द्र, जो कि शक्ति से आविष्ट प्रकाश का प्रतीक है। वह द्यौ से पृथिवी पर उतरता है और अपनी विद्युतों व वज्रों के द्वारा अन्धकार का नाश करता है, जीवनदायक दिव्य जलों की वर्षा करता है शुनी: अन्तर्ज्ञान की खोज के द्वारा ज्योतियों को ढूँढ निकालता है। वेदों में आया 'गो' शब्द सात्विक शक्तियों का प्रतीक है और 'अश्व' शब्द क्षात्र शक्ति का। आनन्द का प्रतिनिधि देवता है सोम। इस प्रकार योगिराज अरविन्द के मत में अग्नि, इन्द्र, सोम सरमा, ऋभु आदि पुरुष के अन्दर विद्यमान दिव्य शक्तियाँ हैं। इन्हीं के विकास की चर्चा वेदों में है।

श्री अरविन्द के प्राय: इन्ही सिद्धान्तों का चरमोत्कर्ष प्राप्त होता है, वैदिक तत्वज्ञान की प्रतीक लिपि के अद्वितीय गवेषक डॉ. फतहसिंह जी के विवेचन में। जो कि पूर्वापेक्षया अधिक गम्भीर है और शास्त्रीय धरातल पर अवस्थित है।

गायत्री सामान्यत: एक छन्द का नाम है, पर जो गायत्री वेदमाता कही जाती है और जो छन्द ही नहीं कभी-कभी किसी मन्त्र की देवता भी बन जाती है, वह श्येन बनकर स्वर्ग से सोम लाती है, संगीत की सृष्टि करती है और गय

नामक प्राणों का विस्तार करती है, क्या यह अक्षर परिमाणात्मक छन्द के द्वारा सम्भव है? वेदाध्येता की इस जिज्ञासा का सुन्दर समाधान आचार्य प्रवर इस प्रकार करते हैं-

वेदों में गायत्री एक छन्द का नाम ही नहीं अपितु वह आत्मा की एक ऐसी शक्ति है जो आनन्दमय कोश रूप द्यौ से लेकर सूक्ष्मदेह रूप अन्तरिक्ष और स्थूल देह रूप पृथिवी तक रहती है। स्थूल-सूक्ष्म और कारण देह को पार करने के कारण वह त्रिगमना है। गायत्री छन्द के तीन पाद भी इस त्रिविधतामय क्षेत्र की ओर संकेत करते हैं। आनन्दमय कोश से वापिस लौटती हुई वह 'विपरीता' कहलाती है। निरुक्तकार यास्क भी गायत्री की व्युत्पत्ति में इस बात का संकेत करते हैं-

गायत्री गायतेः स्तुति कर्मणः त्रिगमना वा विपरीता।
(७/१२)

गायत्री की इस उभयगति को जब 'अग्निष्टोम युगल' गायत्री की संज्ञा दी गई तो वे दोनों गतियाँ उस गायत्री रूप श्येन की दो पक्ष हो गई। गायत्री की ऊर्ध्वगति को प्रस्तुति और अधोगति को स्तुति कहते हैं। प्रस्तुत होने पर गायत्री का प्राण के द्वारा वायु के साथ सन्धान होता है, इसके फलस्वरूप शुद्ध चित्त आनन्दमय कोश का सोम प्राप्त करता है। गायत्री की यह गति उसे, सोम के लिए आनन्दमयकोश की यात्रा करने वाला श्येन बना देती है वही ब्रह्म का वीर्य है। गायत्री के अवरोह से मानव तन में 'गय' नामक प्राणों का विस्तार और विकास होता है। इस प्रकार गय प्राणों के प्रसंग से भी उसका नाम गायत्री होता है।

पुरुष और पुमान् का वैदिक वाङ्मय के आधार पर विश्लेषण करते हुये आचार्य जी कहते हैं- पुत्र के निवर्चन में पुमान् शब्द के मूल पुम् को नरक का वाचक बताना और उसके रक्षक को पुत्र कहना कोरे अन्धविश्वास पर आश्रित नहीं है, वेद में पूः और पुम् शब्द से क्रमशः पुरुष और पुमान् शब्द बनते हैं। पुरुष ऊर्ध्वगति का प्रतीक है तो पुमान् अद्योगति का। ऊर्ध्वगति में मन, वाणी, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, त्वक् हाथ, पैर, गुदा, शिश्न दस स्वर्ग बन जाते हैं तो अद्योगति में ये ही नरक बन जाते हैं।[१] अधोगति से पुरुष को ऊपर उठाने वाला कोई हाड़ माँस का पुत्र नहीं प्रत्युत इन्द्र है, परमात्मा है। जिसको स्मरण करते ही पाप मूल वृत्र का वध होता है और सूर्य उषा आदि की ज्योति द्वारा मानव जीवन में वह स्वर्ग उतर आता है जिसे ज्योतिर्मण्डित हिरण्यय कोश कहा गया है-

अष्ट चक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।

इस स्वल्प वैदिक तत्त्व विवेचना से स्पष्ट है कि वैदिक भाषा रहस्यमयी है लौकिक भाषा से सर्वथा भिन्न है। यहाँ शब्दालंकार हैं, अर्थालंकार हैं, आख्यान संवादादि शैलियाँ हैं। विशेष रूप से रूपक हैं प्रतीक हैं। प्रतीकात्मक शैली चमत्कार पूर्ण अवश्य है किन्तु अत्यन्त जटिल है और संकेत संकुल भी है। उसका शाब्दिक अनुवाद करना असम्भव है। दुर्भाग्यवश वेदार्थ करने की जो पद्धति ब्राह्मण ग्रन्थों से आरम्भ हुई और जिसे किसी सीमा तक आचार्य यास्क ने सुरक्षित रखा उसे समझने के सूत्र चिरकाल से लुप्त हो चुके थे। सायणाचार्य ने प्रशंसनीय प्रयत्न किया, वेदार्थ की सारी सामग्री एकत्र भी कर ली पर उसका यथार्थ उपयोग नही हो पाया । पुनरपि अभी इस क्षेत्र में बहुत परिश्रम की आवश्यकता है। वस्तुतः अभी तक हम वेद के सम्बन्ध में जितना जान पाये हैं तुरीयांश ही है **''त्रिपादस्यामृतं दिवि''** तीन भाग रहस्यमय ही बने हुये हैं। वेङ्कटमाधव की यह उक्ति सर्वथा यथार्थ है-

संहितायास्तुरीयांशं विजानन्त्यधुनातनाः।
तस्मान्नाल्पश्रुतैर्मन्दैः कार्यो वेदार्थ निर्णयः।।

टिप्पणी

१. मनो नरको, वाङ् नरकः, प्राणोनरकः, चक्षुर् नरकः, श्रोत्रं नरको, हस्तौनरको, गुदं नरकः, शिश्नं नरकः, पादौ नरकः। जै.उ. (४.११.५.१)

- गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद, जनपद बिजनौर।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)	
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र–	रु.
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	५००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	८०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र–	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	३५०.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१००.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००
	वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	६०.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल	
	प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल	
	द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल	
	पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल	
	दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल	
	प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग	
	सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग	
	सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
	वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)	
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग)	
	सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
४२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
४३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	

विविध

५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००

सिद्धान्त ग्रन्थ

५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१२०.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	१०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००

कर्मकाण्डीय

५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००

पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१५.००
८१.	सन्धिविषय	
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में.....

हमारी पंजाब यात्रा

– राजेन्द्र जिज्ञासु

श्री डॉ. धर्मवीर जी वर्ष में एक दो बार देश के विभिन्न भागों में बिना बुलाए प्रचार यात्राएँ करते हैं। वे उन स्थानों पर भी जाते हैं। जिन स्थानों पर आर्य समाजें हैं या कभी थीं, वहाँ जाने से कुछ जागृति होती है। संगठन को बल मिलता है और जिन क्षेत्रों में आर्यसमाज का प्रचार नहीं है या नहीं था वहाँ पर वैदिक धर्म का बीज बोया जाता है।

मैं पहले भी कुछ यात्राओं में उनके साथ रहा हूँ। जुलाई मास के दूसरे सप्ताह के अन्त में भीषण गर्मी में आप पंजाब की यात्रा पर निकल पड़े। श्री आचार्य सोमदेव जी, श्रीमान् कर्मवीर जी साथ हो लिए। भीषण गर्मी में जितना कार्य होना चाहिए था उतना तो हम न कर सके परन्तु इस यात्रा से संगठन को बड़ा लाभ पहुँचा। सभा की गाड़ी में हम पहले फ़ाजिल्का पहुँचे। समाज मन्दिर सूना पाया। मैं पुराने आर्य नेता लाला सुनामराम जी स्वतन्त्रता सेनानी का घर खोजने लगा। कोई बताने वाला नहीं था। सामने एक नवनिर्मित भवन में द्वार खटखटाया तो भीतर से एक बालक ने आकर बताया कि आप उन्हीं के घर में हैं।

घर के बड़े भी आ गये। समाज को उन्नत करने के लिये जो कुछ कहना था कहा। वहाँ कुछ समय धर्म चर्चा करके हम सब देश के वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध डॉ. वसन्त के दर्शनार्थ गये। नब्बे वर्षीय आयुर्वेद के उपासक के साथ देश और समाज की उन्नति व सेवा के विषय में चर्चा होती रही। हमने उन्हें अपने स्वाध्याय का निचोड़ तथा आयुर्वेद की महिमा पर एक अच्छा ग्रन्थ लिखने की प्रार्थना की। आपका पूरा समय उपासना, गायत्री जप तथा स्वाध्याय में ही व्यतीत होता है।

अबोहर में डॉ. धर्मवीर जी को श्री डॉ. सुशील रत्न जी मिगलानी तथा डॉ. सरोज मिगलानी से भी मिलवाया। यह दम्पति निष्ठावान् समाज सेवी तथा परोपकारी का प्रेमी है। कुछ समय श्री पवन नागपाल के परिवार में बिताया।

फाजिल्का से हम सब झुमियाँवाली ग्राम पहुँचे। रात्रि समय प्रचार की व्यवस्था ग्रामवासियों ने की। युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सबकी उपस्थिति अच्छी थी। सारे ग्राम ने प्रचार की मांग की। परोपकारिणी सभा की ओर से प्रचार में सहयोग करने का आश्वासन दिया गया। प्रात: यज्ञ के पश्चात् प्रवचन हुए फिर फिरोजपुर पहुँचे। वहाँ हम आर्य अनाथालय गये।

वहाँ की व्यवस्थापिका जी ने अनाथालय तथा डी.ए.वी. संस्थाओं की जानकारी दी। हमें भोजन भी करवाया। सन् १९७७ में अनाथालय के संस्थापक का फोटो वहाँ था। मैंने तब भी मांगा था। अब वह दुर्लभ फोटों नहीं है। न कोई श्रीयुत् मथुरादास जी को जानता है। हमें बताया गया कि सन् १९३० में यहाँ कन्या पाठशाला खोली गई। मैंने उन्हें बताया कि लड़कियों का स्कूल तो यहाँ ऋषि के जीवन काल में ही स्थापित हो गया था। तब परोपकारिणी सभा के प्रधान महाराणा सज्जनसिंह ने कन्याओं के लिए बहुत कुछ भेजा। इस संस्था के लिए तो पर्याप्त दान दिया ही। उनके पास पुरानी एक भी रिपोर्ट नहीं। उन्हें बताया गया कि पुरानी कई रिपोर्टें मैंने परोपकारिणी सभा तथा श्री अनिल आर्य को दी हैं।

खेद का विषय है कि नई-नई रिपोर्टों में बड़े-बड़े बाबुओं के बहुत फोटो हैं परन्तु महाराणा सज्जनसिंह, लाला मथुरादास आदि किसी का नाम तक कोई नहीं जानता।

हम वहाँ से डॉ. साधुराम जी, ब्रह्मदत्त जी के पुराने समाज मन्दिर गये। वहाँ के युवा पुरोहित जी ने बहुत सेवा की। समाजों के कई सज्जन मिलने आ गये। समाज की उन्नति व प्रचार की समस्याओं पर सबसे विचार विमर्श हुआ। समाज के उत्सव पर पुन: आने का वचन देकर हम वहाँ से मोगा के लिए चल पड़े। स्वर्गीय लाला देवीदास जी के कारखाने पहुँचे। वहाँ मान्या इन्दु जी ने स्वागत सत्कार किया। कई सामाजिक बन्धु मिलने आ गये। प्रश्नोत्तर होते रहे। परोपकारिणी सभा के लिए दान भी मिला।

मोगा से हम स्वामी दर्शनानन्द जी के जन्म स्थान, लाला लाजपत राय जी की नगरी जगराँवाँ पहुँचे। उस प्रसिद्ध नगर में अब कोई नहीं जानता कि दर्शनानन्द महाराज की कोटि का महात्मा दार्शनिक यहाँ जन्मा था। न तो वहाँ समाज मन्दिर का पता चला और न ही स्वामी दर्शनानन्द जी के जन्मगृह का। जोशी ब्राह्मणों को खोजा। स्वामी जी के पिता का नाम भी बताया फिर भी उनके घर का पता न लगा। इससे मन आहत हुआ।

लाला लाजपतराय जी के पैतृक घर की खोज को निकल पड़े। जब उसका पता भी न चला तो मैंने कहा कि किसी राजनीति से जुड़े व्यक्ति या किसी अग्रवाल से पता मिलेगा। एक बड़ी दुकान पर सोमदेव जी व मैं पहुँचे।

दुकानदार गर्ग था। भला सज्जन था। मैंने कहा, लाला लाजपतराय भी तो गर्ग गोत्रीय थे। उनका पैतृक घर देखने आये हैं। उसने बड़ी श्रद्धा से कहा कि पहले श्री सोमदेव जी मेरी गद्दी पर बैठें। मुझे जलपान का अवसर दें। हमारे पास समय नहीं था। हमने क्षमा मांग ली। उसने पता बता दिया। हम लाला जी के पितृगृह पहुँच गये। वहाँ एक छोटा सा संग्रहालय है।

लाला जी के व्यक्तित्त्व के अनुरूप तो गली को नहीं बनाया गया परन्तु संग्रहालय छोटा होने पर भी दर्शनीय है। हमने कई फोटो लिये। एक पाण्डुलिपि पर सोमदेव जी का ध्यान गया। वह उर्दू में है। मुझे पूछा यह क्या है? यही हमारा यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि रही। वह पाण्डुलिपि पं. चमूपति कृत 'ख़ाके शहीदाँ' काव्य की है। जलियाँवाला हत्याकाण्ड के समय लाला जी विदेशों में देश निकाला के दिन बिता रहे थे। वह लौटे तो देशवासियों ने उनका मुम्बई में भव्य स्वागत किया। तब पं. चमूपति जी ने एक डिबिया में जलियाँवाला बाग की रक्तरंजित मिट्टी तथा 'खाके शहीदाँ' काव्य संग्रह उन्हें भेंट किया। मैंने पण्डित जी की राष्ट्रीय कविताओं के संग्रह 'भारत भक्ति' में यह कहानी दी है।

वह ऐतिहासिक पाण्डुलिपि (पं. चमूपति जी का हस्तलेख) वहाँ पाकर हम गद्‌गद् हो गये। पण्डित जी का उर्दू हिन्दी का लेख अब परोपकारिणी सभा के पास आ गया। लाला लाजपतराय जी का हिन्दी का लेख भी मिल गया। वहाँ सर सैयद अहमद खाँ कृत कुरान के अनुवाद का कुछ सार लाला जी के पिता मुंशी राधाकृष्ण कृत भी देखा। हम उसे लेने दोबारा जगराँवाँ जायेंगे। देखेंगे कि उसका कैसे उपयोग प्रयोग करना है।

जगराँवाँ से हम एक उत्साही आर्य युवक श्री संजय के यहाँ लुधियाना पहुँचे। भोजन वहीं किया। सारे परिवार से मिले। समाज की उन्नति के उपायों पर चर्चा की और वहाँ से गुरुकुल करतारपुर पहुँचे। रात वहाँ रुके। आचार्य जी से, श्री सुखदेव जी से भेंट हुई। दोनों समय के सत्संग में भाग लिया।

अगले दिन आर्यसमाज अड्डा होशियारपुर गये। पुस्तकालय देखा। स्वामी जी की कोठी देखी। समाज के प्रधान जी ने नष्ट हो रही लायब्रेरी को बचाने के लिये जो कर सकते हैं किया है। बहुत कुछ तो नष्ट हो गया है। एक पुरानी पत्रिका की फाईल हमें भी देने की कृपा की। दीमक तो इसे.... परन्तु ऋषि जीवन पर कुछ सामग्री जो इसमें है उसका लाभ उठाया जा रहा है।

फिर माडल टाउन समाज पहुँचे। वहाँ प्रधान जी ने खुलकर चर्चा की। भोजन भी करवाया। ज्ञानी दित्तसिंह की पुस्तिका के उत्तर की बात की। हम लोगों ने बताया कि परोपकारी में इसकी समीक्षा की जा चुकी है। अचम्भा तो इस बात पर है कि यह पुस्तिका छपी जालन्धर से है। उन्हें बताया गया कि दित्तसिंह जी ने स्वयं को इसमें वेदान्ती लिखा है, सिख नहीं। इसमें सिखों के किसी भी ग्रन्थ व पोथी का एक भी प्रमाण नहीं। न किसी सिख गुरु का नाम है। इसमें अधिक क्या लिखा व कहा जावे।

वहाँ से हम पूज्य पं. त्रिलोकचन्द्र जी के मेधावी आर्य सुपुत्र डॉ. ऋषि आर्य जी को मिलने गये। उनसे मिलकर हम सबको बड़ा आनन्द हुआ। स्मरण रहे कि ऋषि जी पाँच वर्ष की आयु में अपने माता-पिता के संग आर्य समाज के लिए जेल गये थे।

आगे हम अमृतसर के आर्यसमाज शक्तिनगर पहुँचे। सूचना प्राप्त कर कई पुराने आर्य परिवारों के सक्रिय सज्जन रात्रि मिलने आ गये। बहुत सेवा की। धर्म चर्चा भी होती रही। धर्मवीर जी ने सबको समाज सेवा की प्रेरणा दी। प्रातः सत्संग में धर्मवीर जी ने व मैंने विचार रखे। मान्य पथिक जी निमन्त्रण देने पहुँच गये।

जलियाँवाला स्मारक देखने सब गये। वहाँ रत्नचन्द्र, डॉ. सत्यपाल, स्वामी श्रद्धानन्द, माता रत्नदेवी के चित्र देखकर सबको बहुत प्रसन्नता हुई। 'खाके शहीदाँ' कविता वहाँ शिला में खुदाई गई।

वहाँ स्वामी अनुभवानन्द जी का चित्र लगना चाहिए। उनका हत्याकाण्ड से पहले वहाँ जोशीला व्याख्यान हुआ। उन्हें फांसी दण्ड सुनाया गया फिर फांसी की बजाय कारावास का कठोर दण्ड दिया गया। परोपकारिणी सभा उनका चित्र खोजकर वहाँ लगवायेगी। अमृतसर के आर्य भाई अपना स्वर्णिम इतिहास भूल गए। मैंने सब पुराने बड़े-बड़े ऋषि भक्तों का स्मरण करवा दिया। श्री स्वामी अनुभवानन्द जी का जन्म भी इसी क्षेत्र का था।

मेरी प्रकृति गर्मी से गड़बड़ा गई। मैं अबोहर लौट आया। वहाँ सोमदेव जी आदि जम्मू गये, वहाँ रिहाड़ी कॉलोनी में आर्य कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क किया। सभी आर्यजन रात्रि में समाज पहुँचे। सबसे आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के विषय में चर्चा हुई। अगले दिन रघुनाथ मन्दिर गये। वहाँ रणवीर पुस्तकालय व अनुसन्धान विभाग देखा, अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थ यहाँ सुरक्षित हैं। पुस्तकालय के

कार्यकर्त्ताओं ने पुस्तकालय के विषय में अच्छी जानकारी दी। लौटते हुए पठान आर्यसमाज पहुँचे। वहाँ सायंकालीन महिला सत्संग में धर्मवीर जी ने प्रवचन किया और वे अमृतसर शक्तिनगर आर्यसमाज पहुँच गये और रविवार को समाज के सत्संग में प्रवचन किया। आचार्य सोमदेव जी आर्यसमाज पठानकोट में सत्संग में प्रवचन किया। कर्मवीर जी ने युवाओं को सम्बोधित किया। ये सब अमृतसर से जालन्धर पहुँचे। माता सुशील जी भगत व महिला समाज सभा का बहुत सहयोगी है, उनसे भेंट की, सभा की गतिविधियों के विषय में बताया। वहाँ से कुरुक्षेत्र, दिल्ली, गुड़गाँव होते हुए अजमेर पहुँचे।

सभा के गाड़ी चालक श्री श्याम ने अच्छा साथ दिया। ऐसी यात्राएँ पूरा वर्ष होती रहें तो समाज को ऊर्जा मिले। – **वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६**

ऋषि मेला २०१४ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष ऋषि मेला ३१ अक्टूबर, १, २ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१४ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा :– कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**–७.५ × १५ फीट।

ध्यातव्य : –१. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर–उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना अनुमति के पूर्व में स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम– श्रीमद् भगवद् गीता (एक वैदिक रहस्य) चतुर्थ भाग (अध्याय १६ से १८)
लेखक– स्वामी रामस्वरूप (योगाचार्य)
मूल्य– ४००/– रु. **पृष्ठ** – ३०४

श्रीमद् भगवतद् गीता पर विद्वानों की लेखनी टीका रूप में अपने–अपने आधार पर लिखी गई है। प्रसिद्ध टीका श्री लोकमान्य तिलक एवं श्री गुरुदत्त जी की है जो अपने अनूठे स्वरूप में है। गीता प्रेस गोरखपुर की छवि अवतारवाद की है। धर्मक्षेत्र में कर्म को प्रतिपादित किया है। श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को महाभारत में युद्ध के समय की प्रेरणा, मन परिवर्तन की भावना आदि से अर्जुन का हृदय परिवर्तन होता है। निष्काम कर्म की भावना उत्प्रेरित होती है।

भारत में अनेक विद्वानों की गीता पर टीकाएँ हैं, उनकी कलम अपने आधार पर चली है। गीता को वेद मन्त्रों के साथ भावों को स्पष्ट करने का श्रम किया है, उसका श्रेय स्वामी रामस्वरूप जी को जाता है, वास्तव में यह परिश्रम अनुकरणीय है। सम्पूर्ण गीता को चार भागों में बांट कर वेद मन्त्रों का अर्थ, भाव हिन्दी टीका द्वारा स्पष्ट किया है। उदाहरणार्थ:–

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि।।
– गीता १८/१९।।

अर्थ– ज्ञान, कर्म तथा कर्त्ता का प्रकृति के तीन गुणों के भेद से सांख्य शास्त्र में तीन प्रकार से कथन किया गया है। उनको भी मुझसे भली प्रकार सुन।

अथर्ववेद मन्त्र १०/७/८ में यत्परममवयं यच्च मध्यमं प्रजापतिः। ससृजे विश्वरूपम्। अर्थात् जो उत्कृष्ट सात्विक, निकृष्ट तामस और जो मध्यम राजस सब भिन्न–भिन्न रूपों वाला यह सब वस्तु जगत् प्रजा को पालने वाले प्रभु ने उत्पन्न किया है।

यजुर्वेद मन्त्र २३/५४ अध्याय ३१, सामवेद मन्त्र ६१७ से ६२१, ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १२९ अर्थात् चारों वेदों में अर्थ व भाव विस्तार से स्पष्ट किया है। अध्याय १६ से १८ तक सम्पूर्ण अध्ययन से पाठक अधिक गहराई तक पहुँच पायेंगे। सभी के लिए ग्राह्य है।

– **देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ अगस्त २०१४ तक)

१. श्री विष्णु सोमाणी, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. श्री देव मुनि, अजमेर ४. श्री वृद्धिचन्द गुप्ता, जयपुर, राज. ५. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ६. श्री मदन मोहन कथुरिया, नई दिल्ली ७. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ८. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ९. श्री गजेन्द्रसिंह, मुम्बई, महा. १०. श्री अमरसिंह, जयपुर, राज. ११. श्रीमती सीमा गुप्ता, विलासपुर, छ.ग. १२. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. १३. श्री भास्कर सेन गुप्ता, बैंगलूर, कर्ना. १४. श्रीमती सीमा गुप्ता, बीकानेर, राज.।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ अगस्त २०१४ तक)

१. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ३. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ४. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ५. श्रीमती सीमा गुप्ता, विलासपुर, छ.ग. ६. कै. चन्द्रप्रकाश व श्रीमती कमलेश त्यागी, हरिद्वार, उ.ख. ७. रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सोसाईटी, नई दिल्ली ८. श्री टी.के. घोष, गुड़गाँव, हरि. ९. जैनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली १०. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ११. श्री शिव कुमार कुर्मी, जयपुर, राज.।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का नि:शुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमश: हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-09110400057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

संस्था - समाचार

१ से १५ अगस्त २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान, आर्यजगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। दोनों समय प्रवचन स्वाध्याय आदि की व्यवस्था है। इन प्रवचनों, स्वाध्याय के क्रम में वेदमन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों पर क्रमश: विचार किया जाता है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में डॉ. धर्मवीर जी ने मृत्यु सूक्त (ऋग्वेद १०/१८) के प्रथम व द्वितीय मन्त्र की व्याख्या की। प्रथम मन्त्र-

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा न: प्रजां रीरिषो मोत वीरान्।।

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि यहाँ मन्त्र में देवयान मार्ग की चर्चा है। हमारे शास्त्रों में देवयान-पितृयान का उल्लेख आता है। जो देवताओं का मार्ग है वह देवयान और जो पितरों का मार्ग है वह पितृयान कहलाता है अर्थात् जिसमें जाकर व्यक्ति वापस नहीं आता, जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है, मुक्त हो जाता है वह देवयान है और जिसमें जाकर वह फिर इस संसार में वापस आ जाता है, जन्म-मरण के चक्र से गुजरता रहता है, वह पितृयान है। यहाँ मन्त्र में कहा जा रहा है कि मृत्यु का मार्ग देवयान से भिन्न है अर्थात् मृत्यु देवयान मार्ग में नहीं जा सकता दूसरे शब्दों में जो देवयान मार्ग से जाते हैं उन्हें मृत्यु कुछ नहीं कर सकता, बल्कि पितृयान से जाने वालों को अपने प्रभाव में रखता है। अगर हम मृत्यु के प्रभाव से बचना चाहते हैं तो हमें भी देवयान मार्ग का पथिक बनना होगा। द्वितीय मन्त्र-

मृत्यो: पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयु: प्रतरं दधाना:।
आप्यायमाना: प्रजया धनेन शुद्धा: पूता भवत यज्ञियास:।।

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि यहाँ मन्त्र में यज्ञियास=यज्ञ करने वालों को शुद्ध, पवित्र बनने का निर्देश किया जा रहा है। यज्ञियास ही मृत्यु के पद को पीछे ढकेलने का सामर्थ्य रखते हैं (मृत्यो: पदं योपयन्त:) यज्ञियास ही अपनी आयु को बढ़ा सकते हैं और यज्ञियास ही प्रजा और धन दोनों को तृप्ति के स्तर तक प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ डॉ. साहब ने बताया कि सम्पत्ति दो ही प्रकार की हो सकती है जड़ और चेतन। इन दोनों ही प्रकारों का यहाँ उल्लेख है। सम्पत्ति के मामले में सन्तुष्टि प्रमुख है अर्थात् जिसके पास सन्तुष्टि है वह अमीर है, धनी है, सम्पन्न है और जिसके पास सन्तुष्टि नहीं वह गरीब है। इसी भाव को भर्तृहरि के निम्न दो पद्य सटीक रूप में प्रस्तुत करते हैं-

(क) मही रम्या शय्या विपुलमुपधानं भुजलता,
वितानं चाकाशं व्यजनमनुकूलोऽयमनिल:।
स्फुरद्दीपश्चन्द्रो विरति वनिता संगमुदित:,
सुखं शान्त: शेते मुनिरतनुभूतिर्नृप इव।।

(ख) वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या:,
सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेष:।
स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला,
मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्र:।।

उपरोक्त प्रसंग के आधार पर यह निष्कर्ष कभी भी नहीं लिया जा सकता कि हम गरीब-साधनहीन रहें। वस्तुत: हमें अपनी पूरी शक्ति से पुरुषार्थ करना चाहिए और उससे प्राप्त परिणामों/उपलब्धियों में सन्तुष्ट रहना चाहिए।

अपने प्रवचन क्रम में आचार्य सत्येन्द्र जी ने महर्षि के ऋग्वेद भाष्य एवं मनुस्मृति के श्लोकों की चर्चा की। मन्त्र-

प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानोऽबोधि विप्र: पदवी: कवीनाम्।
पृथुपाजा देवयद्भि: समिद्धोऽप द्वारा तमसो वह्निरावः।
(ऋ. ३/५/१)

की चर्चा करते हुए बताया कि विद्वान्, जन सामान्य के लिए अपनी विद्या का दान देते हैं और उन्हें उसी प्रकार अज्ञान के आवरण से हटा देते है जिस प्रकार प्रात:काल सूर्योदय होने पर अन्धकार हट जाता है अर्थात् लेश मात्र भी नहीं रहता। विद्वान् अपने उपदेशों से अज्ञानान्धकार में सोए हुए व्यक्तियों को वैसे ही जगाता है जैसे सूर्य अपने आगमन पर सबको जगा देता है। मनुस्मृति की व्याख्या क्रम में श्लोक-

अकारं चाप्युकारं च मकारं च प्रजापति:।
वेदत्रयान्निरदुहद् भूर्भुव: स्वरितीति च।।
(मनु. २/५१)

की व्याख्या करते हुए बताया कि जैसे दही को मथकर

घृत रूपी सार को उससे पृथक् किया जाता है उसी प्रकार वेदों का सार 'अ', 'उ' और 'म' अक्षरों का संयोग 'ओ३म्' नामक पद है। ओ३म् के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द का मत इसके महत्त्व को सुस्पष्ट कर देता है, महर्षि कहते हैं कि – 'जो अकार, उकार और मकार के योग से 'ओ३म्' यह अक्षर सिद्ध है, सो यह परमेश्वर के सब नामों में उत्तम नाम है, जिसमें सब नामों के अर्थ आ जाते हैं। जैसा पिता-पुत्र का प्रेम सम्बन्ध है, वैसे ही ओंकार के साथ परमात्मा का सम्बन्ध है। इस नाम से ईश्वर के सब नामों का बोध होता है।'

अपने रविवारीय प्रवचन के क्रम में कृष्ण-जन्माष्टमी के अवसर पर आपने बताया कि श्री कृष्ण हमारे इतिहास पुरुष है। अपने कर्त्तव्यों का सदैव उत्तमता के साथ पालन करने वाले श्री कृष्ण ने अपने पूरे जीवन में एक भी पाप कर्म नहीं किया। बालक कृष्ण का जन्म ही विकट परिस्थितियों में हुआ। मामा कंस, आपके प्राणों के इस तरह प्यासे थे कि अपनी बहन देवकी और बहनोई वसुदेव को कारागार में डाल रखा था। लेकिन सुनियोजित् योजना के तहत श्रीकृष्ण का जन्म होते ही उन्हें गोकुल में नन्द के यहाँ भेज दिया गया और वहीं उनका पालन-पोषण किया गया। इस दौरान पूतना, बक आदि के द्वारा उसके प्राण लेने के अनेक प्रयास किए गए लेकिन वीर बालक बचता गया। महर्षि सन्दीपनी के उज्जैन स्थित गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की। पुनः कंस, नरक, केशि, अरिण, शिशुपाल जैसे अधर्मकारी लोगों का प्राणान्त किया। महाभारत युद्ध के समय युद्ध को टालने का भरसक प्रयास किया, लेकिन जब युद्ध अवश्यम्भावी हो गया तो पाण्डवों को सहायता देकर उन्हें युद्ध जिताया। युद्ध में संकट के कई अवसरों पर (भीष्म, द्रोण, कर्ण आदि कौरव महारथियों द्वारा पाण्डव-सेना को शीघ्रता से नष्ट करने पर, अर्जुन की जयद्रथ-प्रतिज्ञा आदि घटनाओं के समय) कृष्ण की सहायता और उनकी कल्पना प्रवण मति से ही पाण्डव उससे पार पा सकें। लेकिन दुर्भाग्य इस देश का कि जहाँ एक ओर तथाकथित विद्वान् उनकी ऐतिहासिकता पर ही प्रश्न उठाते हैं तो दूसरी ओर अधिकांश जनसमुदाय इन्हें महापुरुष न मानकर अवतार घोषित करते हैं, रासलीला जैसे कितने ही निन्दनीय कर्मों को उनके चरित्र के साथ जोड़ते हैं। श्रीकृष्ण के जन्म के अवसर पर हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके यथार्थ जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर, औरों को भी इसका उपदेश करेंगे।

अपने प्रवचन क्रम में आचार्य सोमदेव जी ने काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि दोषों को हटाने की प्रेरणा दी। महाभारत के यक्ष-युधिष्ठिर संवाद का उद्धरण देते हुए, युधिष्ठिर के उत्तरों को अन्य-अन्य दृष्टान्तों से पुष्ट करते हुए बताया कि जब व्यक्ति इन दोषों को त्यागता है तो एक तरह से अपनी उन्नति के अवरोधकों को ही हटाता है और जब इन दुर्गुणों का अपने में पोषण करता है, उसे बढ़ाता है तो वह पतन की ओर जाता है। महाभारत के वन पर्व में प्रसिद्ध यक्ष-युधिष्ठिर संवाद है, जिसमें यक्ष धर्मराज युधिष्ठिर से प्रश्न पूछता है और युधिष्ठिर स्थिर बुद्धि से इसका उत्तर देते हैं। जो इस प्रकार हैं-

यक्ष- हे युधिष्ठिर! किसको मारकर व्यक्ति सबका प्रिय बन सकता है?

युधिष्ठिर- अहंकार को मारकर व्यक्ति सबका प्रिय बन सकता है।

यक्ष- किसको मारकर व्यक्ति शोक नहीं करता है?

युधिष्ठिर- क्रोध को मारकर व्यक्ति शोक नहीं करता है।

यक्ष- किसको मारकर व्यक्ति धनी हो सकता है?

युधिष्ठिर - काम को मारकर व्यक्ति धनी हो सकता है।

यक्ष- किसको मारकर व्यक्ति सुखी हो सकता है?

युधिष्ठिर- लोभ को मारकर व्यक्ति सुखी हो सकता है।

पुनः इन प्रश्नोत्तरों की विस्तृत व्याख्या करते हुए आपने बताया कि वस्तुतः 'अहंकार' को मारकर ही व्यक्ति सबका प्रिय हो सकता है। संसार में व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न प्रकार का अहंकार होता है- जैसे सम्पत्ति का अभिमान, पद का, विद्या का, कुल का, धार्मिकता का, दानशीलता का अभिमान आदि-आदि। व्यक्ति जब तक अपने व्यक्तित्व को अभिमान से सीमित रखता है तो उसमें व अन्यों में संघर्ष चलता रहता है, लेकिन जब वह अभिमान का त्याग कर देता है तो वह सबका हो जाता है। महाकवि माघ का उदाहरण देते हुए आपने बताया कि महाकवि माघ थे तो संस्कृत के उच्च श्रेणी के कवि लेकिन इन्हें अपनी विद्या का अभिमान था। एक बार महाकवि जब अपने आश्रयदाता राजा के साथ जंगल में घूम रहे थे तो रास्ता भटक गए, काफी दूर चलने पर एक कुटिया दिखाई दी, समीप जाकर देखा तो वहाँ एक बूढ़ी माता झाड़ू लगा रही थी। अपने अभिमान में माघ ने पूछा- हे बूढ़िया! ये रास्ता कहाँ जाता

है? बूढ़ी माता ने उनको अच्छी तरह से देखा फिर बोली- मूर्ख! रास्ता कहीं नहीं जाता। रास्ते पर तो राहगीर जाते हैं। बूढ़ी माता के इस अप्रत्याक्षित उत्तर को सुनकर माघ तिलमिला गए। लेकिन जंगल में भटकते हुए बहुत देर हो चुकी थी, अत: फिर पूछा- अच्छा हम राहगीर हैं, अब बता दो कि ये रास्ता कहाँ जाता है? बूढ़ी बोली- राहगीर तो दो होते हैं- सूर्य और चन्द्रमा, तुम इनमें से कौन हो? माघ को इस उत्तर की कल्पना नहीं थी। माघ के साथ में राजा है जिनके सामने बड़े-बड़े कवि आपकी विद्वत्ता का लोहा मान चुके थे और यहाँ क्या, यहाँ एक बूढ़ी माता महाकवि माघ के वाक्यों में ही प्रश्न चिह्न लगा रही थी। माघ जंगल में और भटकना नहीं चाहते थे, उन्होंने धैर्य रखकर पूछा- अच्छा माई! हम राजा के आदमी हैं, अब बता दो ये रास्ता कहाँ जाता है। बूढ़ी बोली- राजा तो दो हाते हैं- इन्द्र और यम। तुम किस राजा के आदमी हो? माघ बोले- हम क्षमा करने वाले हैं। बूढ़ी बोली- क्षमा तो पृथिवी और नारी ही करती है, तुम इनमें से कौन हो? माघ बोले- हम क्षणभंगुर हैं। बूढ़ी बोली- क्षणभंगुर तो दो होते हैं- सम्पत्ति और युवावस्था, तुम इनमें से कौन हो? बूढ़ी माता के उत्तर से निरुत्तर होते माघ समझ ही नहीं पा रहे थे कि क्या उत्तर दिया जाए अन्त में बोले- हम हारने वाले हैं। बूढ़ी बोली- हारते तो दो ही तरह के व्यक्ति हैं एक वो जिसका चरित्र चला जाता है या वो जो किसी का ऋणी हो जाता है, तुम्हारा क्या गया क्या चरित्र गया या तुम किसी के ऋणी हो? माघ बूढ़ी माता के चरणों में गिर गए, बोले- माई तू कौन है? बूढ़ी माता बोली- महाकवि माघ! उठो। माघ को इस प्रकार अपना नाम सुनकर आश्चर्य हुआ, उन्होंने पूछा- माई तुम हमें जानती हो। बूढ़ी बोली- हाँ महाकवि मैं तुम्हें देखते ही पहचान गई थी और मैं तुम्हारे अहंकार के बारे में भी जानती हूँ। माघ अभी तुम कुछ लोगों के ही प्रिय हो, लेकिन जब तुम अपना अभिमान छोड़ दोगे तो सबके प्रिय हो जाओगे।

इसी प्रकार जब व्यक्ति अपने क्रोध को मार देता है तो शोक नहीं करता है। पाण्डवों के वनवास के समय द्रोपदी भी साथ थी। इतना कुछ अन्याय होने पर युधिष्ठिर शान्त थे, इन्हें देखकर द्रोपदी को अत्यन्त क्रोध आता था। लेकिन साथ में भीम, अर्जुन आदि भी थे अत: द्रोपदी अपनी बात नहीं कह पा रही थी और अन्दर ही अन्दर जली जा रही थी। जंगल में भटकते-भटकते जब पाण्डव किसी वृक्ष के नीचे विश्राम के लिए ठहरे तो युधिष्ठिर पहरा देने लगे और चारों भाई सो गए। द्रोपदी को निद्रा कहाँ आती, मौका पाकर युधिष्ठिर से बोली- महाराज! आप बड़े धार्मिक बनते हो, लेकिन आपके इस धार्मिकपने से हमें मिला क्या? बचपन में भीम को जहर दिया गया, आप भाईयों को अपनी माता के साथ लाक्षागृह में जलाकर मारने का प्रयास किया गया, और तो और आपकी इसी धार्मिकता के कारण हम यहाँ जंगल में भटक रहे हैं। युधिष्ठिर धैर्यपूर्वक द्रौपदी की बाते सुन रहे थे वे जानते थे कि द्रौपदी क्रोध में जल रही है। धैर्यपूर्वक बोले- महारानी! धर्म में मेरी श्रद्धा है, मैं धर्म का पालन करना चाहता हूँ लेकिन इसके लिए मैंने धर्म से यह समझौता थोड़े ही किया है कि जब तक तुम मुझे सुख दोगे तब तक मैं तुम्हारा पालन करूँगा। वस्तुत: युधिष्ठिर अपने क्रोध को मार चुके थे अत: शोक नहीं करते थे। १२ वर्ष के वनवास और १ वर्ष के अज्ञातवास के दु:खों को सहन करने के पश्चात् भी आपने दुर्योधन से सुलह करनी ही चाही, पाँच गाँवों में ही सन्तुष्टि दिखाकर युद्ध टालना चाहा।

यक्ष के तीसरे प्रश्न का युधिष्ठिर ने उत्तर दिया- 'काम' को मारकर व्यक्ति अर्थ सम्पन्न बन सकता है। हमारे इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं जहाँ व्यक्ति काम के प्रति आसक्त होकर अपनी सम्पत्ति वैभव से हाथ धो देता है। अज्ञातवास के दौरान जब पाण्डव वेष बदलकर राजा विराट के यहाँ उसके सेवक बनकर रह रहे थे, तो द्रौपदी (सैरन्ध्री) को देखकर सेनापति कीचक आसक्त हो गया। कामग्रस्त कीचक सैरन्ध्री से प्रणय निवेदन करने लगा। कीचक जो एक राज्य का सेनापति था, अर्थ सम्पन्न था, कामासक्त हो गया तो उसके सारे अर्थ भी अनर्थ हो गए। जब द्रौपदी ने यह बात भीम को बताई तो भीम ने उसे ऐसा मारा कि वह मांस का एक लोथड़ा बनकर रह गया। सिर में ऐसा प्रहार किया कि सिर शरीर के अन्दर घुस गया, इसी प्रकार सारे अंगों को शरीर के अन्दर घुसा के उसे एक मांस का पिण्ड बना दिया।

युधिष्ठिर का चौथा उत्तर भी उतना ही सटीक लगता है कि लोभ को मारकर ही व्यक्ति सुखी बन सकता है। ऋषियों का सिद्धान्त है कि यदि पृथिवी के समस्त भोगों को एक व्यक्ति के लिए भी दे दिया जाए तो वह व्यक्ति भी उन भोगों को भोगकर पूर्ण तृप्त नहीं हो सकता और व्यावहारिक दृष्टि से ऐसा करना असम्भव है अर्थात् किसी एक व्यक्ति के लिए संसार के समस्त भोग उपलब्ध नहीं कराए जा सकते और व्यक्ति में उन समस्त भोगों को भोगने

का सामर्थ्य भी नहीं है। लेकिन फिर भी व्यक्ति साधनों की दौड़ लगाता है। एक साधन को लक्ष्य बनाता है, उसे प्राप्त कर लेने पर दूसरे साधन को लक्ष्य बनाता है, दूसरे को प्राप्त करने पर तीसरे को लक्ष्य बनाता है, इस प्रकार साधनों के पीछे निरन्तर दौड़ता ही जाता है। जब तक व्यक्ति के जीवन में लोभ होता है वह सन्तोष के सुख से वंचित होता है और जैसे ही वह अपने जीवन में सन्तोष को स्थान देता है तो योगदर्शनकार के मतानुसार अनुत्तम सुख को प्राप्त करता है- **सन्तोषादनुत्तमः सुखलाभः।**

२. श्रावणी पर्व महोत्सव- १० अगस्त को श्रावण पूर्णिमा के उपलक्ष्य में श्रावणी पर्व, संस्कृत दिवस व हैदराबाद सत्याग्रह दिवस संयुक्त रूप से मनाया गया। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल के नवीन ब्रह्मचारी- देवव्रत जी, रमेश जी और रवि जी का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार आचार्य सत्येन्द्र जी के आचार्यत्व में सम्पन्न किया गया। वानप्रस्थी रमेश मुनि जी ने ब्रह्मत्व प्रदान किया। इस अवसर पर आचार्य सत्येन्द्र जी, डॉ. रमेश मुनि जी व ब्र. रवि जी ने अपने विचार प्रकट किए व ब्र. रामदयाल जी, ब्र. सोमेश जी, वासुदेव जी, माता कुमुदनी ने भजन प्रस्तुत किए। ब्र. प्रभाकर जी ने संचालन किया, सायंकालीन सत्र में श्री कर्पूरचन्द जी, माता ऊषा जी व सोमेश जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर हैदराबाद सत्याग्रह में अपनी प्राणाहुति देने वाले वीरों तथा उसमें भाग लेने वाले वीर सैनिकों को भी श्रद्धांजलि दी गई।

३. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- ११ से १७ अगस्त २०१४- भुवनेश्वर आर्यसमाज में श्वेताश्वतरोपनिषद् की व्याख्या की। कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर श्री कृष्ण के व्यक्तित्व की व्याख्या की। ११ अगस्त को पुरी आर्यसमाज में लोगों से सम्पर्क किया। १६ अगस्त को डी.ए.वी. भुवनेश्वर के छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

आगामी कार्यक्रम- (क) १३ से १४ सितम्बर २०१४- नागपुर आर्य सम्मेलन में भाग लेंगे।

(ख) २६ से ३० सितम्बर २०१४- स्मृति भवन, जोधपुर (राज.) में महर्षि को श्रद्धांजलि देंगे।

४. आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) २७ जुलाई २०१४- मलपुरा ग्राम, कोटपुतली, जयपुर (राज.) में बृहद् यज्ञ सम्पन्न कराकर ग्रामवासियों को उपदेश प्रदान किया।

(ख) ३ से ९ अगस्त २०१४- आर्यसमाज सुल्तान बाजार, हैदराबाद, तेलंगाना में वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में व्याख्यान प्रदान किए। इसी दौरान ०८ अगस्त को आर्ष शोध संस्थान (कन्या) गुरुकुल, अलियाबाद (तेलंगाना) तथा वटुकाश्रम अलियाबाद जैसी आर्य संस्थाओं का भ्रमण किया।

(ग) ११ से १७ अगस्त २०१४- आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार में श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में वेद प्रवचन। इसी दौरान १४ अगस्त को दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार में छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान किया, १५ अगस्त को ग्राम बालसमन्द में आर्यसज्जनों से भेंट की, १७ अगस्त को विश्नोई मन्दिर हिसार में 'सर्वधर्म सम्मेलन' में आर्यसमाज के प्रतिनिधि के रूप में व्याख्यान प्रदान किया।

आगामी कार्यक्रम- (क) ६ सितम्बर २०१४- आर्यसमाज बीकानेर-गंगायचा रेवाड़ी (हरि.) के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में व्याख्यान प्रदान करेंगे।

(ख) ०७ सितम्बर २०१४- हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा, रोहतक के मासिक सत्संग में व्याख्यान।

(ग) ८ से १० सितम्बर- आर्यसमाज कीर्तिनगर, दिल्ली में व्याख्यान।

(घ) ११ सितम्बर २०१४- ग्राम शाहपुर, पानीपत में व्याख्यान।

(ङ) १२-१३ सितम्बर २०१४- सरसावा, सहारनपुर में जनसम्पर्क।

(च) २२-२८ सितम्बर २०१४- आर्यसमाज उदयपुर के कार्यक्रम में।

५. आचार्य सत्यप्रिय जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम-(क) ११ जुलाई से ६ अगस्त २०१४- बिकानेर (राज.) में राष्ट्रीय सहायक विद्यालय समूह के विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को नैतिक शिक्षा, आर्य संस्कृति सिद्धान्तों का परिचय, ध्यान पद्धति, आर्यवीर दल के व्यायाम आदि के माध्यम से चरित्र निर्माण हेतु प्रेरित किया।

(ख) १० से १७ अगस्त २०१४- आर्यसमाज ताजनगर नागपुर (महा.) में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में मार्गदर्शन प्रदान किया। इति।।

गुरुजनों की शिक्षा से सब को सुख बढ़ता है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२९

सम्पादकीय

पृष्ठ संख्या ६ का शेष भाग.....

कार्यालय जाने की भी आवश्यकता नहीं, बस आप संगणक गले में डाले कहीं भी रहो, आप काम करने में स्वतन्त्र हैं। तथ्य तो यह है कि कम्पनी ने उन्हें इतनी सुविधायें नहीं दी हैं अपितु सुविधा देकर उन्हें खरीद लिया है। अब उनके पास अपना कुछ भी नहीं है। न समय उनका है, न परिवार उनका है, उनकी है तो बस कम्पनी उनकी है। कम्पनी जानती है इस व्यक्ति को दूसरी कम्पनी एक लाख देने को तैयार है तो यह कम्पनी उसे दो लाख में खरीद लेती है और उसे दस लाख का काम करने को दे देती है जिसे कम्पनी की भाषा में लक्ष्य (टारगेट) कहते हैं, वह लक्ष्य पूरा नहीं करता तो नौकरी जाने का डर है, इस डर में वह रात-दिन काम में जुटा रहता है और तनाव का शिकार हो जाता है बस। अब सोचने की बात है यह कम्पनी की नौकरी केवल व्यक्ति या परिवार ही नहीं देश के लिए भी कितनी महंगी पड़ रही है। आज हमारे युवक सन्तानहीन रहेंगे तो कल देश में इनकी प्रतिभा का लाभ उठाने वाला कौन होगा?

वेद कहता है-

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।

आज की शिक्षा पद्धति और जीवन शैली ने समाज में दो असमान वर्गों को समाज घोषित कर दिया। दोनों का अध्ययन-अध्यापन व जीवनयापन का सिद्धान्त भी एक ही रख दिया। आधुनिक विचारकों की दृष्टि में तो यह समानता का सिद्धान्त बन गया। हमने इसे न्याय मान लिया परन्तु प्रकृति इसे न्याय नहीं मानती न समानता के सिद्धान्त को स्वीकार करती है। आप प्रकृति को अपने अनुकूल नहीं बना सकते, आपको प्रकृति के अनुरूप चलना होगा।

मूल समस्या है स्त्री-पुरुष प्रकृति की समान या एक प्रकार की संरचना नहीं है। दोनों शरीरों का प्रयोजन ही पृथक्-पृथक् है तो समानता कैसे हो सकती है। एक और महत्त्वपूर्ण अन्तर है दोनों शरीर अपने-अपने प्रयोजनों को सिद्ध करने के लिए अलग-अलग प्रकार से तैयार होते हैं। स्त्री का शरीर सन्तान के निर्माण की प्रक्रिया नौ वर्ष की अवस्था से सक्रिय हो जाता है। इस प्रकार एक कन्या नौ से १२ वर्ष की आयु के मध्य अपनी शरीर की रचना वातावरण संस्कार के अनुसार रजस्वला हो सकती है। शीत प्रधान देशों में यह आयु बड़ी होती है, उष्णता प्रधान देशों में यह आयु कम देखने में आती है। भारत में सोलह वर्ष की आयु में एक स्त्री प्रजनन में समर्थ हो जाती है और उसका श्रेष्ठ प्रजनन काल बीस वर्ष की आयु है।

प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्र और चिकित्सा शास्त्र इसी विचार की पुष्टि करते हैं। उन्होंने स्त्री और पुरुष की विवाह योग्य आयु को तीन वर्गों में विभाजित किया। १६ से १८, १९ से २१ तथा २२ से २४, इसके बाद विवाह श्रेष्ठ समय नहीं रहता।

पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने भी इस पर शोध किया है। समय-समय पर हुए सात शोध उपक्रमों में बीस वर्ष की आयु स्त्री के सन्तानोत्पत्ति के लिए श्रेष्ठ आयु सिद्ध हुई है। इन शोधकर्त्ताओं ने अपने शोध कार्यक्रमों में अध्ययन किया कि किस आयु में सन्तानोत्पत्ति की सफलता का क्या प्रमाण रहा तो उन्होंने पाया बीस वर्ष की आयु में सन्तानोत्पत्ति के प्रयास सबसे कम असफल हुए। इन अध्ययनों के अनुसार असफलता का प्रतिशत २.२ से लेकर ४ प्रतिशत तक रहा। फिर जैसे-जैसे स्त्री की आयु बढ़ती रही यह असफलता का प्रतिशत भी बढ़ता रहा। पैंतालीस वर्ष की आयु में उत्पत्ति के प्रयासों की असफलता आंकड़ा ५८ से ७५ प्रतिशत चला गया। आज जब समाज में एक लड़की पढ़कर अपने को स्थापित करती है तब उसकी आयु ३२-३५ वर्ष तक हो जाती है और उसके गृहस्थ जीवन के सर्वोत्तम समय जा चुका होता है। पैंतीस वर्ष की आयु में सन्तानोत्पत्ति भी प्रभावित होती है। इस आयु में सन्तानोत्पत्ति के प्रयासों की असफलता का प्रतिशत १७ से २२ तक हो जाता है। आयु के बढ़ने के साथ गर्भस्थ शिशु का विकास भी प्रभावित होता है तथा प्रसव की कठिनाईयाँ भी बढ़ जाती है।

यह अध्ययन पुराने अध्ययन की पुष्टि करता है। सुश्रुत में कहा गया है-

पञ्चविंशे ततो वर्षे पुमान्न नारी तु षोडशे।
समत्वागतवीर्यौ तौ जानीयात् कुशलो भिषक्।

- सूत्र स्थान ३५/१०

अर्थात् जितना सामर्थ्य २५वें वर्ष में पुरुष के शरीर में होता है उतना ही सामर्थ्य १६वें वर्ष में कन्या के शरीर में हो जाता है इसलिए वैद्य लोग पूर्वोक्त अवस्था में दोनों को समवीर्य अर्थात् तुल्य सामर्थ्य वाले जानें।

आज हमारी इस मूल समस्या पर समाज के नेता लोग विचार नहीं कर पा रहे हैं जिसके कारण समाज व देश को उत्तम नागरिक प्राप्त नहीं हो रहे हैं। इस समस्या का समाधान स्त्री-पुरुषों के विकास को ध्यान में रखकर

शिक्षा और जीवन शैली का निर्धारण करना आवश्यक है। विकल्प हमारे पास हो सकते हैं, प्रकृति के पास कोई विकल्प नहीं है। संसार में ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य है, इसकी श्रेष्ठता को बनाये रखना मनुष्य समाज का उत्तरदायित्व है। जैसा कि कहा गया है-

न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्।

हम आज अपनी उन्नति के लिए पागल हैं। कैरियर शब्द हमें चैन नहीं लेने देता। आज सफल समझी जाने वाली महिला पेप्सी की मुख्य कार्यकारी इन्दिरा नुई के शब्द हमारी नई पीढ़ी के लिए विशेष रूप से महिलाओं के मार्गदर्शक हो सकते हैं-

''मुझे नहीं लगता कि महिलाएँ सब कुछ पा सकती हैं। मुझे ऐसा बिल्कुल नहीं लगता। हम सिर्फ दावा करते हैं कि हम हर कुछ हासिल कर सकती हैं।'' उनसे पूछा गया था कि क्या वह महसूस करती हैं कि महिलाओं को सबकुछ मिल सकता है। नियमित रूप से फोर्ब्स और अन्य प्रकाशनों की विश्व की सबसे शक्तिशाली महिलाओं की सूची में नाम दर्ज करने वाली नूई ने कहा कि वह पति के साथ दो बेटियों को पालने की प्रक्रिया में कई बार अपराध-बोध के बोझ से दब गईं। नूई ने कहा कि उन्हें बड़ा अपराध-बोध महसूस होता था कि वह अपनी बेटियों के स्कूल की कई गतिविधियों में हिस्सा नहीं ले सकती थीं क्योंकि वह छुट्टी नहीं ले पाती थीं। उन्होंने कहा, ''हर दिन आपको फैसला करना पड़ता है क्या आप पत्नी या माँ बनना चाहती हैं।'' जब आप बच्चा चाहते हैं तो आपके कैरियर का समय होता है। जब आप प्रबन्धन माध्यम के स्तर पर पहुँचते होते हैं तो आपके बच्चों को आपकी जरूरत है क्योंकि वे किशोरावस्था में होते हैं। ''उन्हें किशोरावस्था के लिए इसकी जरूरत होती है।'' ''और वही वक्त होता है आपके पति को भी आप की उसी तरह जरूरत होने लगती है, उन्हें भी आपकी जरूरत होती है। आप क्या करेंगी? इसके बाद जब आपकी उम्र और बढ़ती है तो आपके माता-पिता को आपकी जरूरत होती है क्योंकि उनकी उम्र हो रही होती है.... और हम बस पिसे हुए होते हैं। हमें सबकुछ बिल्कुल हासिल नहीं हो सकता है।'' नूई ने १४ साल पहले के उस दिन को याद किया जब उन्हें बताया गया कि उन्हें पेप्सीको की अध्यक्ष बनाया जाएगा और निदेशक मण्डल में नियुक्त किया जाएगा। उन्होंने कहा ''मैं अभिभूत थी.... क्योंकि मेरी पृष्ठभूमि देखिए.... मैं कहाँ से आई थी और एक बड़ी अमरीकी कम्पनी की अध्यक्ष बनने वाली थी और निदेशक मण्डल में शामिल होने वाली थी। मुझे लगा मुझे कुछ विशेष हासिल हुआ है।'' नूई ने कहा, ''लेकिन इस बड़ी खबर पर अपनी माँ की प्रतिक्रिया से बहुत निराश हुईं। उनकी माँ ने कहा कि इस खबर को रहने दो। क्या तुम बाहर जाकर दूध ला सकती हो।'' नूई ने कहा, ''उनकी माँ ने कहा- एक बात बता दूँ। तुम पेप्सीको की अध्यक्ष भले ही बन गई। तुम निदेशक मण्डल में भले ही शामिल हो गई, लेकिन जब इस घर में घुसती हो तो तुम पत्नी हो, बेटी हो, बहू हो, माँ हो। तुम सबकुछ हो। कोई इसकी जगह नहीं ले सकता। इसलिए इस बेकार ताज को गैराज में रखो। इस घर में मत लाओ और यकीन मानिए मैंने इस ताज को कभी नहीं देखा।''

इसके बाद कुछ कहने के लिए शेष नहीं रहता, निर्णय आपको करना है-

विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु।

- धर्मवीर

विभु-विनय

महाकवि डॉ. विद्याभूषण जी विभु का यह प्रार्थना गीत श्री राहुल, अकोला के सौजन्य से हमें प्राप्त हुआ है।

- राजेन्द्र जिज्ञासु

जब जब तिमिरमयी भव रजनी
जीवन में उतरे,
आकर मेरे हृदय अजिर में ताँडव नृत्य करे,
ले निज सकल कलाओं को विभु
उर में तब उतरो,
धोकर कल्मिष ज्योत्स्ना से सब
आभा अमर भरो,
पावन शीतल सुखद करो में
मेरा मन बिचरे,
उठे ज्वार-भाटे इस उर में
तव छवि देख हरे।
दुर्दिन में प्रतिध्वनि प्रभु! तेरी
मेरा शून्य भरे
और उसी लय में लय होकर
यह भवसिन्धु तरे।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक खाता संख्या–**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम–**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक खाता संख्या–**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए 'आस्था–भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग–यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था–भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद–प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था–भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा–स्काई, वीडियोकोन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

जिज्ञासा समाधान – ७०

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १– कुछ लोग आर्यसमाज के विषय में भ्रान्तियाँ फैला रहे हैं। कृपया उचित समाधान करें।

क. आर्यसमाज मूर्ति पूजा का खण्डन करता है क्योंकि वह इस्लामिक धर्म से प्रभावित है। इस्लाम मूर्ति पूजा को नहीं मानता। इसलिए आर्य समाजी भी तीर्थों वा मन्दिरों की आलोचना करता है।

ख. स्वामी दयानन्द ने राम के वंशज नानकदेव की भी आलोचना की है।

ग. आर्य संस्कृति सतयुग से चली आ रही है, जबकि आर्य समाज का गठन कलयुग में स्वामी दयानन्द ने किया।

घ. आर्यसमाज अपने अनुयाइयों की श्रेष्ठता के अहंकार के कारण सिमटता जा रहा है।

ङ. कई लोग कहते हैं कि जब हम आर्य संस्कृति की बात करते हैं तो लोग उनको आर्य समाजी समझते हैं जो कि उनको अच्छा नहीं लगता।

– **जिज्ञासु श्रद्धाराम, लालगढ़**

समाधान– **१. क.** इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर हम पहले भी दे चुके हैं। तथापि पुनः लिखते हैं। आर्यसमाज के विषय में अनेक लोगों को भ्रान्तियाँ बनी रही हैं। कुछ लोग कहते हैं आर्यसमाज नास्तिकों का समूह है, कुछ कहते हैं कि आर्यसमाज वाले राम, कृष्ण, शिव आदि को नहीं मानते। यथार्थता से देखा जाये तो ज्ञात होगा कि ठीक-ठीक आस्तिक तो आर्यसमाज को मानने वाला ही है। क्योंकि नास्तिक उसको कहते हैं जो ईश्वर, वेद, धर्म, पुनर्जन्म आदि को नहीं मानता। इसके विपरीत आर्यसमाज तो ईश्वर के सच्चे स्वरूप निराकार, अजन्मा, न्यायकारी, सर्वव्यापक आदि को मानता है, वेद, धर्म, पुनर्जन्म सभी को मानता है। इन सब को मानने वाला नास्तिक कैसे? नास्तिक तो स्वयं वह है जो आर्यसमाज को नास्तिकों का समूह कहता है।

रही बात राम, कृष्ण, शिवादि की तो इनको भी आर्यसमाज बड़े ही सम्मान के साथ महापुरुषों की दृष्टि से देखता है। हाँ, इनको परमात्मा के रूप में नहीं मानता, नहीं देखता।

अब आपके प्रश्नों पर आते हैं। आर्यसमाज मूर्ति पूजा का खण्डन, मन्दिर, तीर्थों की आलोचना इस्लाम से प्रभावित होकर करता है, यह कहना सर्वथा मिथ्या व अज्ञानता का द्योतक है। आर्यसमाज वेद व ऋषियों को आधार मानकर चलता है और वेद व ऋषियों ने कहीं भी मूर्ति पूजा का विधान नहीं किया है। तथाकथित तीर्थों का भी विधान नहीं है। इस आधार पर आर्यसमाज सत्य बात को रखता है जो कि तथाकथित धार्मिकों को खण्डन लगता है।

भ्रान्ति फैलाने वाले को ज्ञात होना चाहिए कि इस्लाम भी एक बहुत बड़ा मूर्ति पूजक (बुत परस्त है) सम्प्रदाय है। मक्का में हज को जाने वाले मुस्लिम वहाँ पड़े काले पत्थर को चूमते हैं। क्या ये उनकी मूर्ति पूजा नहीं? कबरों, मजारों पर जाकर वहाँ धागा बाँधना, उससे मनोकामना पूरी होने के लिए मन्नते माँगना, क्या ये मूर्ति पूजा नहीं? कबरों, मजारों पर चद्दरे चढ़ाना, क्या ये मूर्ति पूजा नहीं? यह सब महामूर्ति पूजा है। भ्रम फैलाने वालों को इस्लाम की ये मूर्त्तिपूजा नहीं दिख रही, केवल उनको मुस्लिमों द्वारा हिन्दुओं की मूर्तियाँ तोड़ना दिख रहा है। भ्रम का निवारण कर सत्य को स्वीकार करें, जो कि आर्यसमाज के पास है।

सत्य तो यह है कि आर्यसमाज किसी इस्लाम से प्रभावित नहीं है। वह तो सत्य सनातन वैदिक परम्परा से प्रभावित है, वेद और ऋषियों का अनुयायी है। इसलिए झूठी मूर्तिपूजा और मिथ्या तीर्थ मन्दिरों की आलोचना करता है। क्योंकि वेदादि सत्यशास्त्रों में मूर्ति को भगवान् मानकर पूजने का विधान नहीं है। माता, पिता, आचार्य, विद्वानों के सत्संग, ब्रह्मचर्य, विद्याध्ययन आदि को तीर्थ मानता है न कि मिथ्या तीर्थ गंगा स्नान आदि को।

ख. यह कहना कि महर्षि दयानन्द ने राम के वंशज नानकदेव जी की आलोचना की थी, अज्ञानता का द्योतक है। इस भ्रान्ति निवारण के लिए हम कहते हैं कि स्वामी दयानन्द ने तो जो कोई भी वेद और वेदानुकूल शास्त्रों के विरुद्ध मान्यताएँ थीं उन सबकी आलोचना व खण्डन किया था। नानकदेव जी की 'वेद पढ़त ब्रह्मा मरे चारों वेद कहानी। संत की महिमा वेद न जानी। ब्रह्म ज्ञानी आप परमेश्वर।।' इस बात की आलोचना की है। यहाँ नानकदेव जी ने वेदों को कहानी कहकर उनकी निन्दा की है और सर्वव्यापक, निराकार परमेश्वर को छोड़कर ब्रह्मज्ञानी को ही परमेश्वर कह दिया। महर्षि दयानन्द ने नानक जी की ऐसी-ऐसी बातों की आलोचना की है जो कि युक्तिसंगत है। अन्यथा महर्षि दयानन्द ने तो उनकी प्रशंसा ही की है। देखिये वे लिखते हैं– 'नानक जी का आशय तो अच्छा था।..... यह सच है कि जिस समय नानक जी पंजाब में हुए थे, उस समय पंजाब संस्कृत विद्या से सर्वथा रहित मुसलमानों से पीड़ित था। उस समय उन्होंने कुछ लोगों को बचाया....। .....इसमें उनके चेलों का दोष है नानक जी का नहीं। जो नानक जी ने कुछ भक्ति विशेष ईश्वर की

लिखी थी उसे करते आते तो अच्छा था। स.प्र. ११ में इस प्रकार महर्षि दयानन्द नानक जी के गुण विशेषों की प्रशंसा ही कर रहे हैं। लेकिन भ्रान्ति फैलाने वाले को महर्षि दयानन्द जी द्वारा नानक जी की आलोचना ही दिख रही है प्रशंसा नहीं।

ग. भ्रान्ति फैलाने वाले आर्य संस्कृति को सतयुग से मान रहे हैं जो कि यह मान्यता गलत है। आर्य संस्कृति तो आदि सृष्टि से चली आ रही है, जिसको एक अरब छियानवे करोड़ आठ लाख तरेपन हजार एक सौ पन्द्रह वर्ष हो चुके हैं। रही बात महर्षि दयानन्द द्वारा कलयुग में आर्य समाज के गठन की तो महर्षि जी महाराज ने मृतप्राय हो चुकी आर्य संस्कृति को पुनः जीवित करने के लिए, आदि सृष्टि में ब्रह्मा से लेकर जैमिनि महर्षि पर्यन्त जो सत्य सनातन वैदिक विचारधारा चली आई थी, उसी के अनुसार उसी सनातन आर्य संस्कृति आर्यसमाज का गठन किया था न कि कोई नवीन मत चलाया था।

घ. आर्यसमाज के सिमटने का कारण अपने अनुयाइयों की श्रेष्ठता का अहंकार कहा सो भी गलत है। चूँकि आर्यसमाज वेदानुकूल बातों को ही मानता है, अतः उसकी बातें श्रेष्ठ क्यों न हों। इस श्रेष्ठता पर आर्य समाजियों को स्वाभिमान है, उसे मिथ्या अहंकार की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

हमें लगता है कि भ्रान्ति फैलाने वाले महाशय आर्य समाज के विषय में बहुत कम जानकारी रखते हैं। आर्यसमाज की अनेकों वेबसाइट खोलकर देखिए भ्रम दूर होगा। वेदादि शास्त्रों की रक्षा के लिए शतशः छात्र, ब्रह्मचारी आर्यसमाज के आर्ष गुरुकुलों में अध्ययन कर रहे हैं। देश के शिक्षा क्षेत्र में विशेष महत्त्व रखने वाली डी.ए.वी. संस्थाएँ भी आर्यसमाज की ही हैं। हजारों विद्यार्थी परीक्षा पद्धति से चल रहे आर्य गुरुकुलों में अध्ययन कर रहे हैं। लाखों लोग आर्यसमाज से जुड़े हुए हैं। इतना सब होते हुए भी आर्यसमाज सिमटता दिखाई दे रहा है, आश्चर्य है।

ङ. आर्यसमाजी बनना कहलाना एक गर्व की बात है न कि अपमान की। वैसे तो ये लोग आर्य संस्कृति की बात करते हैं। यदि ये आर्यसमाज के अर्थ और उद्देश्य को जानते तो इनको ऐसी चिढ़न कभी न होती। आर्य=श्रेष्ठ, समाज=समूह अर्थात् श्रेष्ठों का समूह, यह है आर्यसमाज का अर्थ और उद्देश्य सब संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इनके साथ ऐसा इसलिए है क्योंकि ये आर्य संस्कृति का अर्थ- देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा करना मानते हैं, मृतक श्राद्ध और अन्धविश्वास पाखण्ड को मानते हैं। जिनका वैदिक सनातन आर्य संस्कृति से कोई लेना-देना नहीं है। आर्य संस्कृति तो एक निराकार परमेश्वर की उपासना करना, वेद का पढ़ना पढ़ाना, ब्रह्मयज्ञादि पाँच महायज्ञों का करना है, न कि पाखण्ड, अन्धविश्वास को मानना।

जिज्ञासा २- परोपकारी पत्रिका में आपके द्वारा जो जिज्ञासा समाधान किया जाता है वह वास्तव में सही, सटीक एवं प्रशंसनीय होता है। आपसे निम्नलिखित जिज्ञासाओं का समाधान चाहता हूँ जिसे मैं ही नहीं अपितु अन्य पाठकगण पढ़कर लाभान्वित होंगे।

क. पंचक- किस प्रकार से अनेक अवसरों के लिये पंचक बाधक माने जाते हैं? क्या इनका कोई प्रभाव होता है?

ख. मंगल राशि- अनेक युवकों एवं युवतियों की कुण्डली में मंगल राशि के कारण मंगली माने जाते हैं। इनकी शादियों में अनेक समस्यायें आती हैं और अनेक बार कुछ युवक व युवतियाँ शादी बिना रह जाते हैं। कुछ सनातनी पण्डित कहते हैं कि २७ वर्ष के बाद मंगली राशि का प्रभाव नहीं रहता है। कृपया इस पर विस्तृत रूप से विचार दें।

ग. गुण मिलान- विवाह पूर्व लड़के व लड़की के गुण मिलाये जाते हैं। कहा जाता है कि ३६-३६ गुण माने गये हैं। यदि इन में से २० गुण दोनों के मिल जाते हैं तो ठीक रहता है। इस पर भी अपने विचार देने की कृपा करें।

- डॉ. लक्ष्मणसिंह टांक, ५१, देवपुरम्,
मुजफ्फरनगर-२५१००१ (उ.प्र.)

समाधान २- क. पंचक किसी प्रकार से किसी अवसर पर कोई बाधक नहीं है। शुभ कार्यों के लिए कोई पंचक बाधक नहीं है। न ही इनका किसी कार्य पर कोई प्रभाव पड़ता है। पौराणिक लोग दक्षिणायन में पाँच महिनों को अशुभ मानते हैं। उनमें भी कुछ राशि विशेषों में वे शुभ कार्य नहीं करते हैं। जो कि एक अन्धविश्वास का द्योतक है। परमेश्वर के बनाये प्रत्येक दिन शुभ ही है। उनमें हम कभी भी अपनी अनुकूलता के अनुसार कार्य कर सकते हैं। शुभ कार्य करने के लिए हमारे ऋषियों ने मुख्य रूप से परिवार व सम्बन्धीजनों की प्रसन्नता को रखा है। जब सभी प्रसन्न हों व सबको अनुकूलता हो तो शुभ कार्य किया जा सकता है। उसमें पंचक कोई बाधक नहीं बनता न ही उसका कोई उस कार्य पर प्रभाव पड़ता है।

हाँ, पौराणिक पण्डित पर अवश्य प्रभाव पड़ता है कि वह अपनी ठग लीला कर धन हरण नहीं कर पायेगा। ये पंचक आदि पौराणिकों ने अपने द्रव्य हरण करने के लिए बना रखे हैं। सत्य शास्त्रों में इनका कहीं वर्णन नहीं है। परमेश्वर के किन्हीं दिन विशेषों को अशुभ कहना परमेश्वर

का अपमान करना है। इसलिए इन पंचक आदि के भ्रमजाल में न पड़कर यथावसर अपने कार्य करते चले जाये, जीवन में उन्नति होती रहेगी।

ख. यह मंगल राशि की कथा भी पोप जी ने घड़ रखी है। इसका भी किसी आर्ष ग्रन्थ में वर्णन नहीं है। इन राशियों का जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मंगल का अर्थ ही शुभ, कल्याण, सौभाग्य, अभीष्ट है। अब कोई मंगली है तो उसका अर्थ क्या हुआ? इन पोपों के अनुसार तो अशुभ हुआ किन्तु यथार्थ में मंगली का अर्थ बना शुभ से युक्त, कल्याण से युक्त, सौभाग्य से युक्त, अभीष्ट से युक्त। यदि शुभ, कल्याण से युक्त कोई अशुभ है तो वह पोप जी की दृष्टि में हो सकता है, किसी विद्वान् की दृष्टि में नहीं।

कोई युवक-युवती मंगल राशि में पैदा होने से उनके विवाह में अड़चन पैदा होती है, वह अड़चन मंगल राशि के कारण नहीं होती अपितु वह अड़चन द्रव्य हरण करने हारे पोप जी के कारण होती है। ऐसे ही जिन युवक-युवतियों का विवाह ही नहीं होता, वह भी मंगल राशि के कारण नहीं, अपितु इसी अविद्या की मूर्ति पोप के कारण नहीं होता।

जब किसी भी राशि का प्रभाव हमारे जीवन के प्रारम्भ से ही नहीं हो तो २७ वर्ष की बात ही क्या है। कोई मंगली मंगल राशि से हलका हो या न हो किन्तु ये तथाकथित पण्डित लोग २७ वर्ष तक उसको धन से अवश्य हलका कर देंगे।

ग. विवाह करने से पहले लड़के व लड़की के गुण, कर्म, स्वभाव अवश्य मिलाने चाहिए अन्यथा दोनों को जीवन भर दुःख भोगना पड़ता है। महर्षि दयानन्द ने तो यहाँ तक भी लिखा है कि-

काममामरणात्तिष्ठेत् गृहे कन्यर्तुमत्यपि।
न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित्।।

- मनु. ९.८९

चाहे लड़का-लड़की मरणपर्यन्त कुमार रहें परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण-कर्म-स्वभाव वालों का विवाह कभी न होना चाहिए। ऋषि देख रहें हैं कि यदि विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाव वालों का विवाह हुआ तो गृहस्थ में आनन्द के स्थान पर कलह ही अधिक होगा। ऐसी स्थिति में सन्तान भी उत्तम न होगी। उत्तम सन्तान न होने से परिवार, समाज, राष्ट्र पर भी प्रभाव पड़ता है। इसलिए अनुकूल गुण, कर्म, स्वभाव वालों का ही विवाह होना चाहिए।

यह ३६, २० गुणों वाली कल्पना भी पोप जी की ही है। इस प्रकार के गुणों का देखना व मिलाना कुण्डली के आधार पर पोप जी करते हैं। जो कि सर्वथा अवैदिक है। इन गुणों का व्यक्ति के जीवन से कोई लेना देना नहीं होता। जो पोप जी कुण्डली वाले गुणों के आधार पर विवाह कराते हैं वे कितने ही विवाह ठीक नहीं होते अर्थात् विवाहित पति-पत्नी के गुण, कर्म, स्वभाव नहीं मिल रहे होते। वैसे पोप जी ने कुण्डली वाले गुणों का तो मिलान किया ही था फिर भी अनेकों वैवाहिक जीवन में सुख नहीं होता। इसमें कारण यही है कि दोनों के जन्म से लेकर विवाह अवस्था तक जो उनमें गुण विशेष हैं उनका मिलान न होना। यदि कुण्डली वाले ३६.२० गुणों के गणित को छोड़कर, दोनों लड़के-लड़की की विवाह अवस्था तक के गुण, कर्म, स्वभाव को मिलाकर विवाह किया जाये तो जीवन भर आनन्द रहेगा। अन्यथा तो पोप जी ही उनके धन व आनन्द का हरण करते रहेंगे।

विवाह करने से पूर्व केवल लड़के-लड़की के गुण, कर्म, स्वभाव नहीं देखने होते अपितु दोनों के परिवार के भी देखने होते हैं, देखने चाहिए।

महर्षि लिखते हैं-

महान्त्यपि समृद्धानि गोऽजाविधनधान्यतः।
स्त्री सम्बन्धे दशैतानि कुलानि परिवर्जयेत्।।

- मनु. ३.६

चाहे कितने ही धन-धान्य, गाय, अजा, हाथी, घोड़े, राज्य, श्री आदि से समृद्ध ये कुल हों तो भी विवाह सम्बन्ध में दश कुल छोड़ देने चाहिए।

हीनक्रियं निष्पुरुषं निश्छन्दो रोमशार्शसम्।
क्षय्यामयाव्यपस्मारिश्वित्रिकुष्ठिकुलानि च।।

- मनु. ३.७

जो कुल सत्क्रिया से हीन, सत्पुरुषों से रहित, वेदाध्ययन से विमुख, शरीर पर बड़े-बड़े लोम अथवा बवासीर, क्षयी=दमा, खाँसी, आमाशय (पेट का रोगी), मिरगी, श्वेत कुष्ठ और गलितकुष्ठयुक्त हों, उन कुलों की कन्या वा वर के साथ विवाह करना न चाहिए। क्योंकि ये सब दुर्गुण और रोग विवाह करने वाले के कुल में भी प्रविष्ट हो जाते हैं। इसलिए उत्तम कुल के लड़के और लड़कियों का आपस में विवाह होना चाहिए।

आपने बड़ी अच्छी बात गुणों वाली कही है। ऐसा ही समाज में होना चाहिए, जिससे समाज उत्कृष्ट बने।

हाँ, गुण युवक-युवती व उनके परिवार दोनों के देख कर ही विवाह करना उत्तम है।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

आर्यजगत् के समाचार

१. शोध संगोष्ठी सम्पन्न- दिनांक ७ अगस्त २०१४ को गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल, टीकरी मेरठ में स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय वैदिक शोध-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का आरम्भ करते हुए सर्वप्रथम स्वामी अनन्त भारती ने वेदों में वर्णित नैतिकता में मित्रता, मधुर भाषण आदि तत्त्वों की विस्तारपूर्वक चर्चा की। सारस्वत अतिथि डॉ. कन्हैयालाल पाराशर ने वेद और नीति को परस्पर पर्यायवाची बताते हुए सत्य, दम और त्याग की चर्चा की। 'वैदिक वाङ्मय में नैतिक तत्त्व' विषय पर आयोजित इस शोधसंगोष्ठी में विभिन्न महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों से विद्वान् आये। अन्त में आशीर्वचन देते हुए गुरुकुल के कुलपति स्वामी विवेकानन्द सरस्वती महाराज ने कहा कि संविधान एवं नीति में अन्तर है संविधान दण्ड के बल पर मनवाया जाता है और नैतिक मूल्य एक अनुभूति है, जो अन्तरात्मा से पैदा होते हैं। तदुपरान्त शान्तिपाठ के साथ शोधसंगोष्ठी सम्पन्न हुई।

२. स्थापना दिवस मनाया- जागृति विहार आर्यसमाज मेरठ ने अपना २५वाँ स्थापना दिवस ३ अगस्त २०१४ को उत्साहपूर्वक मनाया। कार्यक्रम प्रातः ओ३म् ध्वजारोहण के साथ आरम्भ हुआ। देव यज्ञ श्री पं. रणधीर शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। उसके बाद आर्य भजनोपदेशक श्री सत्यदेव स्नातक ने सुमधुर भजनों की गंगा प्रवाहित की। इस बीच उन दानी जनों को सम्मानित किया गया जिन्होंने भवन-निर्माण के कार्य में उदारतापूर्वक सहयोग किया। इसके उपरान्त स्वामी चन्द्रदेव ने आर्य शब्द की व्याख्या करते हुए मानव को सुखी जीवन जीने की राह बताते हुए दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया। मुख्य वक्ता के रूप में आर्यसमाज के प्रतिष्ठित लेखक, वक्ता एवं विद्वान् श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य आमन्त्रित थे। विशिष्ट अतिथि डॉ. वेदपाल आर्य ने आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या करते हुये समाज को एक सूत्र में बांधने की प्रेरणा दी। कार्यक्रमों में श्रोताओं की उपस्थिति उत्साहजनक रही।

३. सम्मेलन सम्पन्न- आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल द्वारा बंगाल की सभी आर्य समाजों का दि. १३ जुलाई २०१४ को एक दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का आयोजन आसानसोल के दयानन्द विद्यालय के सभागार में किया गया। सभा के प्रधान आर्य भारत भूषण त्रिपाठी ने बताया कि सम्मेलन में २०० आर्यसमाज के लगभग ७०० प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

४. वैदिक सत्संग आयोजित- आर्यसमाज विज्ञान नगर, कोटा, राजस्थान में श्रावणी उपाकर्म पर्व पर आयोजित यज्ञ एवं पूर्णिमा वैदिक सत्संग के अवसर पर आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने बताया कि चातुर्मास में प्रत्येक गृहस्थ को वेदों का श्रवण, मनन और निदिध्यासन पूर्वक स्वाध्याय जरूर करना चाहिए। इसके लिए ही हमारे पूर्वजों ने श्रावणी पूर्णिमा से संकल्प पूर्वक वेदों के पठन-पाठन और स्वाध्याय करने का महत्त्व बताते हुए श्रावणी उपाकर्म पर्व का प्रारम्भ किया।

५. स्मृति पर्व- हिन्दी, उर्दू, मुलतानी (सिरामकी) भाषाओं में बड़ी महारत से धार्मिक, सामाजिक, प्रेरणादायी कविताएँ और शायरी करने वाले सुप्रसिद्ध आर्य कवि, आर्यसमाज के पूर्व प्रधान तथा अरबी संगम, सोनीपत के पूर्व अध्यक्ष स्व. श्री हरीशचन्द्र 'नाज़' सोनीपती जी की ८६वीं जयन्ती के अवसर पर आर्यसमाज 'शहर' बड़ा बाजार सोनीपत के तत्त्वावधान में स्मृति पर्व आयोजित किया गया। इस अवसर पर हरियाणा उर्दू एकादमी द्वारा 'फखे-हरियाणा' सम्मान हेतु चयनित उर्दू, हिन्दी सिरामकी के प्रख्यात कवि डॉ. राणा गन्नौरी, आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य हरिप्रसाद, पं. रामचन्द्र आर्य आदि सम्मिलित हुए।

६. शिविर- वैदिक वीरांगना दल की ओर से लड़कियों व महिलाओं के लिए निःशुल्क आवासीय शिविर दिनांक १ सितम्बर २०१४ से २८ फरवरी २०१५ तक जयपुर, राजस्थान में लगाया जा रहा है। इस शिविर में आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म के परिचय के साथ ही हवन प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। साथ ही जो लड़कियाँ व महिलाएँ कला संकाय की १२वीं कक्षा की परीक्षा देना चाहती हैं उनका प्राइवेट फार्म भी भरवा दिया जाएगा व उनको पढ़ाकर परीक्षा दिलवा दी जाएगी। इस शिविर में सिलाई, गायन व ध्यान के साथ ही अंग्रेजी व संस्कृत विषय का भी प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा यह शिविर पूर्ण रूप से निःशुल्क रहेगा।

सम्पर्क- अनामिका शर्मा ०९८२९६६५२३१, ०१४१-२५२५८७०

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल में नवीन ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार
श्रावण पूर्णिमा, अगस्त २०१४

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : ३० अगस्त, २०१४ ३९५९/५९

महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरुवर विरजानन्द दण्डी

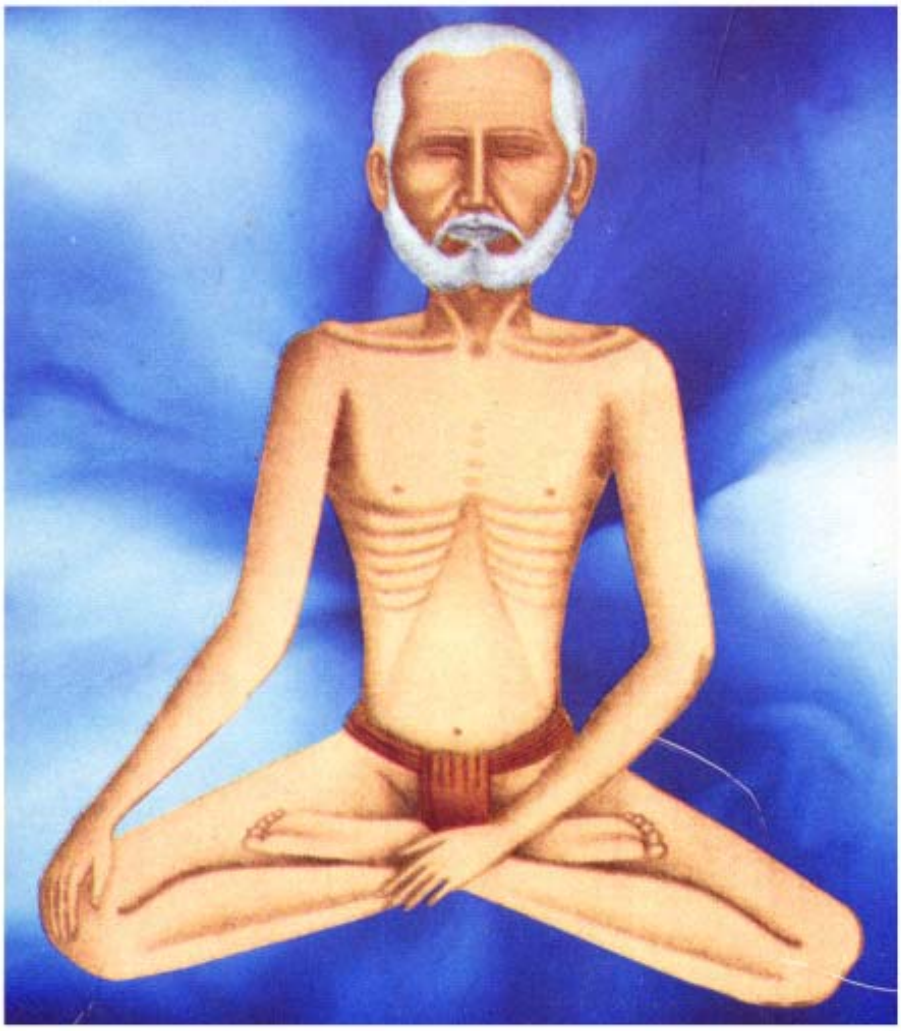

जन्म : सन् १७७९ ई.

अवसान : १४ सितम्बर १८६८ ई.

Design © Mittal 9829797513

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट